



॥ श्रीदुर्गायै नमः॥



Same of the same o

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

-≒श्रीदुर्गासप्तशती झ

स्थूलाक्षरेमुद्रिता

(मूलभागपाठविधिसहिता)

[दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र-शापोद्धार-कवच-अर्गला-कीलक-चैदिक-तान्त्रिकरात्रिस्क-देव्यथर्वशीर्ष-नवार्णविधि-वैदिक-तान्त्रिकदेवीस्क-प्राधानिक-चैकृतिक-मृतिरहस्य-क्षमाप्रार्थना-श्रीदुर्गामानसपूजा-श्रीदुर्गोद्धात्रिश-काममाला-देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र-सिद्ध-कुञ्जिकास्तोत्रसहिता]

गीताप्रेस, गोरखपुर

のできるからできることできることできる

सं॰ २००९ से २०४६ तक सं॰ २०४७ चौदहवाँ संस्करण सं॰ २०४८ २,४०,००० २०,००० २०,०००

मूल्य-आठ रुपये

मुद्रक- गीताप्रेस, गोरखपुर

प्राप्तिस्थानम् गीताप्रेस, पत्रालय गीताप्रेस (गोरखपुर)

विषय-सूची

बिषय		वृष्ठ	-संख्या	विषय		मु पूर	इ-संख्या
१-सप्तक्षोकी दुर्गा			وم	१-ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्	•••	•••	२०७
२-श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनाम	त्तोत्रम्	•••	6	२-तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्	•••	•••	290
३-पाठविधिः			१३	३-प्राधानिकं रहस्यम्		•••	२१६
१देव्याः कवचम्			29	४-वैकृतिकं रहस्यम्	•••		२२२
२-अर्गलास्तीत्रम्			३२	५-मृतिंग्हस्यम्			२३०
३-कीलकम्		•••	३७	६-क्षमा-प्रार्थना	•••	•••	२३५
४—वेदोक्तं रात्रिस्कम्		•••	83	७-श्रीदुर्गा-मानसपूजा	•••	•••	२३७
५-तन्त्रोक्तं रात्रिस्कम्		•••	83	८-दुर्गोद्वात्रिशन्नाममाला			२४३
६-श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्	•••	•••	४६	९-देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्		•••	२४५
७—नवाणैविधिः	•••	•••	प्रथ	१०-सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्			२५०
८—सप्तशतीन्यासः	•••	•••	80	११-सप्तरातीके कुछ सिद्ध सम्प	ुड मन्त्र		२५२
४-श्रीदुर्गासप्त शती	•••	•••	६४	१२-श्रीदेवीजीकी आरती	•••	•••	२६१
५-उपसंहारः		•••	२०२	१३-देवीमयी	•••	•••	२६४

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लजा तां त्वां नताः स परिपालय देवि विश्वम्।।

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच-भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनि । देवि त्वं कलौ हि कार्यसिन्द्रचर्थमुपायं बृहि यत्नतः ॥ देव्युवाच प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम् । देव र्जाव तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥ मया श्रीदुर्गासप्तरुंकिस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्ट्रप श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः। ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। मोहाय प्रयच्छति ॥ महामाया बलादाकृष्य

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

हरसि भीतिमशेषजन्तोः दुगें स्मृता द्दासि । स्वस्थैः समृता मतिमतीव शुभां दारिद्रचदु:खभयहारिणि त्वदन्या का सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥ २ ॥ सर्वोपकारकरणाय शिवे सर्वार्थसाधिके। सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु सर्वशक्तिसमन्विते । सर्वेशे सर्वस्वरूपे भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ५॥ ISE रोगानशेषानपहंसि सकलानभीष्टान्। कामान् तु চ্ছা

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां विपन्नराणां विपन्नराणां विपन्नराणां प्रयानित ॥ ६ ॥ सर्वाबाधाप्रदामनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनादानम् ॥ ७ ॥ इति श्रीसप्तश्लोकी हुर्गा सम्पूर्ण ॥



30

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने। यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥ १॥ ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी। आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा ग्रूलधारिणी॥ २॥ पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः। मनो बुद्धिरहंकारा चित्तरूपा चिता चितिः॥ ३॥

दु॰ अष्ट॰ पृष्ठ

सत्यानन्दस्वरूपिणी सर्वमन्त्रमयी सत्ता अनन्ता माविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः ॥ ४ ॥ देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५॥ सर्वविद्या दक्षकन्या अपर्णानेकवर्णा च पारलावती पारला कलमझीररञ्जिनी ॥ ६ ॥ पट्टाम्बरपरीधाना सुरसुन्दरी। अमेयविकमा सुन्दरी क्रा मातङ्गी मतङ्गमुनिपृजिता॥ ७॥ वनदुगां ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कोमारी वैष्णवी तथा। लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥८॥ वाराही

दु० अष्ट० पृष्ठ १०

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुढिदा। सर्ववाहनवाहना ॥ ९ ॥ बहुलप्रेमा बहुला महिषासुरमर्दिनी। निशुम्भशुम्भहननी मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १०॥ सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी। सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥१९॥ अनेकशस्रहस्ता च अनेकास्रस्य धारिणी। कुमारी चैककन्या च केशोरी युवती यतिः॥१२॥ अप्रोदा चैव प्रोदा च वृदमाता महोदरी मुक्तकेशी ENTERII Jammmu. Digitized महाब्ला ॥ १३॥

दु॰ अष्ट॰ पृष्ठ

अग्निज्वाला रोद्रमुखी कालरात्रिस्तपिखनी। नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥१४॥ शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी। कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ १५॥ य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्ट्रकम्। नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ १६॥ धनं धान्यं सुतं जायां हयं हिस्तिनमेव च। चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेनमुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ १७॥ कुमारीं पूजियत्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।

दु० अष्ट० पृष्ठ १२

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरेरिप। राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ १९॥ गोरोचनालक्तककुङ्कमेन सिन्द्ररकर्प्रमध्त्रयेण। विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञों भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥ भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतिभषां विलिख्य प्रपठेत स्तोत्रं स भवेत सम्पदां पदम् ॥ २१॥

इति श्रीविश्वसारतन्त्रे दुर्गाष्टोत्तरज्ञतनामस्तोत्रं समाप्तम्



पाठविधिः*

साधक रनान करके पित्र हो आसन-शुद्धिकी क्रिया सम्पन्न करके शुद्ध आसनपर बैठे; साथमें शुद्ध जल, पूजनसामग्री और श्रीदुर्गासप्तशतीकी पुस्तक रखे। पुस्तकको अपने सामने काष्ठ आदिके शुद्ध आसनपर विराजमान कर दे। ललाटमें अपनी रुचिके अनुसार भस्म, चन्दन अथवा रोली लगा ले, शिखा बाँध ले; फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्त्व-शुद्धिके लिये चार बार आचमन करे। उस समय निम्नाङ्कित चार मन्त्रोंको क्रमशः पढ़े—

ॐ ऐं आत्मतन्वं शोधयामि नमः खाहा।

ॐ हीं विद्यातन्वं शोधयामि नमः खाहा।।

ॐ क्वीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः खाहा।

ॐ ऐं हीं क्षीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः खाहा ॥

यह विधि यहाँ संक्षिप्त रूपसे दी जाती है। नवरात्र आदि विशेष अवसरोंपर तथा शतचण्डी आदि अनुष्ठानोंमें विस्तृत विधिका उपयोग किया जाता है। उसमें यन्त्रस्थ कलश, गणेश, नवग्रह, मातृका, बास्तु, सप्तर्षि, सप्तचिरंजीब, ६४ योगिनी, ५० क्षेत्रपाल तथा अन्यान्य देवताओंकी वैदिक विधिसे पूजा होती है। अखण्ड दीपकी व्यवस्था की जाती है। देवीप्रतिमाकी अञ्चन्यास और अग्न्युत्तारण आदि विधिक साथ विधिवत पूजा की जाती है। नवदुर्गापूजा, उज्योतिःपूजा, विदेक गणेशादिसहित

तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनींको प्रणाम करे; फिर (पवित्रे स्थो वैष्णव्यो इत्यादि मन्त्रसे कुशकी पवित्री धारण करके हाथमें लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नाङ्कित रूपसे संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुः । ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपराई श्रीक्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्व-न्तरेऽष्टाविद्यतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्दीपे भारतवर्षे भरतस्वण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्तेकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकायने महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते द्वर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुकशनिषु सत्सु शुमे योगे शुभकरणे एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्रश्रतिस्मृतिपुराणोक्तफल-प्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा अहं ममात्मनः सपुत्रस्थीवान्धवस्य श्रीनवदुर्गा-

कुमारीपूजा, अभिषेक, नान्दीश्राद्ध, रक्षावन्धन, पुण्याहवाचन, मङ्गलपाठ, गुरुपूजा, तीर्थावाहन, मन्त्र-स्नान आदि, आसनशुद्धि, प्राणायाम, भृतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मातृकान्यास, विहर्मातृकान्यास, सृष्टिन्यास, स्थितिन्यास, शिक्कलान्यास, शिवकलान्यास, हृदयादिन्यास, षोढान्यास, विलोमन्यास, तत्त्वन्यास, अक्षरन्यास, व्यापकन्यास, ध्यान, पीठपूजा, विशेषाध्यं, क्षेत्रकीलन, मन्त्रपूजा, विविध मुद्राविधि, आवरणपूजा एवं प्रधानपूजा आदिका शास्त्रीय पद्धतिके अनुसार अनुष्ठान होता है । इस प्रकार विस्तृत विधिसे पूजा करनेकी इच्छावाले भक्तोंको अन्यान्य पूजा-पद्धतियोंकी सहायतासे भगवतीकी आराधना करके पाठ आरम्भ करना चाहिये।

नुप्रहतो प्रहक्तराजकृतसर्वविधपीडानिष्ट् तिपूर्वकं नैक्ज्यदीर्घायुः पृष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निष्ट् तिस्वीभीष्टकलावाप्तिधर्मार्थकाममोश्च तुर्विधपुरुपार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं शापोद्धारपुरस्सरं कवचार्गलाकीलक-पाठवेदतन्त्रोक्तरात्रिसक्तपाठदेव्यथर्वशीर्षपाठन्यासविधिसहितनवार्णजपसप्तश्चतीन्यासध्यान-सहितचरित्रसम्बन्धिविनयोगन्यासध्यानपूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच ।। सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।' इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिभीवता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तश्चतीपाठं तदनते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्रजपं वैदतनत्रोक्तदेवीसक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं शापो-द्वारादिकं च करिष्ये।

इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवीका ज्यान करते हुए पञ्चोपचारकी विधिसे पुस्तककी पूँ जा करे, योनिमुद्राका प्रदर्शन करके भगवतीको प्रणाम करे, फिर मूळ नवार्ण मन्त्रसे पीठ आदिमें आधारशक्तिकी स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तकको विराजमान करे । इसके बाद

१-पुस्तक-पूजाका मन्त्र-

अ नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः । नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

(वाराहीतन्त्र तथा चिदम्बरसंहिता)

ध्यात्वा देवीं पञ्चपूजां कृत्वा योन्या प्रणम्य च । आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम् ॥ CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA शापोद्धार करना चाहिये। इसके अनेक प्रकार हैं। 'ॐ हीं क्षी श्री कां कीं चण्डिकादेव्ये शापनाशानुप्रहं कुरु कुरु खाहा'—इस मन्त्रका आदि और अन्तमें सात बार जप करे। यह शापोद्धार मन्त्र कहळाता है। इसके अनन्तर उत्कीळन मन्त्रका जप किया जाता है।

 'सप्तराती-सर्वस्व'के उपासना-क्रममें पहले शापोद्धार करके बादमें षडक्क्सिहत पाठ करनेका निर्णय किया गया है, अतः कवच आदि पाठके पहले ही शापोद्धार कर लेना चाहिये। कात्यायिनी-तन्त्रमें शापोद्धार तथा उत्कीलनका और ही प्रकार बतलाया गया है--- अन्त्याद्याकेद्विरुद्रत्रिदिगब्ध्यक्केष्विभर्तवः। अश्वोऽश्व इति सर्गाणां शापोद्धारे मनोः क्रमः ॥' 'उत्कीलने चरित्राणां मध्याद्यन्तमिति क्रमः ।' अर्थात सप्तशतीके अध्यायोंका तेरह-एक, बारह-दो, ग्यारह-तीन, दस-चार, नौ-पाँच तथा आठ-छ:के क्रमसे पाठ करके अन्तमें सातवें अध्यायको दो बार पढ़े। यह शापोद्धार है। और पहले मध्यम चरित्रकाः फिर प्रथम चरित्रका, तत्पश्चात् उत्तर चरित्रका पाढ करना उत्कीलन है। कुछ लोगोंके मतमें कीलकमें बताये अनुसार 'ददाति प्रतिग्रह्णाति'के नियमसे कृष्णपक्षकी अष्टमी या चतुर्दशी तिथिमें देवीको सर्वस्व-समर्पण करके उन्हींका होकर उनके प्रसादरूपसे प्रत्येक वस्तुको उपयोगमें लाना ही शापोद्धार और उत्कीलन है । कोई कहते हैं-छः अङ्गोंसहित पाठ करना ही शापोद्धार है । अङ्गोंका त्याग ही शाप है । कुछ विद्वानोंकी रायमें शापोद्धार कर्म अनिवार्य नहीं है; क्योंकि रहस्याध्यायमें यह स्पष्टरूपसे कहा है कि जिसे एक ही दिनमें पूरे पाठका अवसर न मिले, वह एक दिन केवल मध्यम चरित्रका और दूसरे दिन शेष दो चरित्रोंका पाठ करे । इसके खिवा, जो प्रतिदिन नियमपूर्वक पाठ करते हैं, उनके लिये एक दिनमें एक पाठ न हो सकनेपर एक, दो, एक, चार, दो, एक और दो अध्यायोंके क्रमसे सात दिनोंमें पाठ पूरा करनेका आदेश दिया गया है । ऐसी दशामें प्रतिदिन शापोद्धार और कीलकं कैसे सम्भव है। जो हो, हमने यहाँ जिश्चासुओंके लाभार्थ शापोद्धार और उत्कीलन ट्रह्मेनोंके Sanskin Academy, Jaminm. Digitized by S3 Foundation USA

इसका जप आदि और अन्तमें इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है—'ॐ श्री क्लीं हीं सप्तराति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु खाहा।' इसके जपके पश्चात् आदि और अन्तमें सात-सात बार मृतसंजीवनी विद्याका जप करना चाहिये, जो इस प्रकार है—'ॐ हीं हीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्यापयोत्थापय कीं हीं हीं वं खाहा।' मारीचकल्पके अनुसार सप्तराती-राापविमोचनका मन्त्र यह है—'ॐ श्री श्री क्लीं हूँ ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।' इस मन्त्रका आरम्भमें ही एक सौ आठ बार जप करना चाहिये, पाठके अन्तमें नहीं। अथवा रुद्रयामल महातन्त्रके अन्तर्गत दुर्गाकल्पमें कहे हुए चण्डिका-शाप-विमोचन मन्त्रोंका आरम्भमें ही पाठ करना चाहिये। वे मन्त्र इस प्रकार हैं—

ॐ अस्य श्रीचिष्डकाया ब्रह्मविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य विश्वष्ठनारद-संवादसामचेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं हीं शक्तः त्रिगुणात्मस्बरूपचिष्डकाशापविष्ठक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्धचर्थे जपे विनियोगः।

ॐ (हीं) रीं रेतः खरूषिण्ये मधुकैटभमर्दिन्ये ब्रह्मविश्वामित्रशापाद् विम्रक्ता मन ॥ १ ॥ ॐ श्रीं बुद्धिखरूषिण्ये महिषासुरसैन्यनाशिन्ये ब्रह्मविश्वामित्र- शापाद् विम्रक्ता भन ॥ २ ॥ ॐ रं रक्तस्वरूषिण्ये महिषासुरमदिन्ये ब्रह्मविश्वामित्र- शापाद् विम्रक्ता भन ॥ ३ ॥ ऽॐ। अं रक्तस्वरूषिण्ये महिषासुरमदिन्ये ब्रह्मविश्वामित्र- ३

शापाद् विम्रुक्ता भव ॥ ४ ॥ ॐ छां छायास्त्रह्मिण्ये द्तसंवादिन्ये ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र-शापाद् विद्युक्ता भव ।। ५ ।। ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्ये धूम्रलोचनघातिन्ये ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ॥६॥ ॐ तृं तृषाखरूपिण्ये चण्डमुण्डवधकारिण्ये ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्र-शापाद् विम्रक्ता भव ॥ ७ ॥ ॐ क्षां श्वान्तिस्वरूपिण्ये रक्तवीजवभकारिण्ये ब्रह्मवश्चिष्ठ-विश्वामित्रशापादु विम्रक्ता भव ॥ ८॥ ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मविश्वविश्वामित्रशापादु विम्रुक्ता भव ॥ ९ ॥ ॐ लं लजाखरूपिण्यै शुस्भवधकारिण्यै त्रसनशिष्ठविश्वामित्रशापाद निम्रक्ता भव ।। १० ॥ ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्ये देवस्तत्ये ब्रह्मविश्वायित्रश्वापाद् विद्युक्ता भव ॥ ११ ॥ ॐ श्रं श्रद्धाखरूपिण्ये सकलफलदात्र्ये ब्रह्मवशिष्टविश्वामित्रशापाद विम्रुक्ता मव ॥ १२ ॥ ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्ये राजवरप्रदाये ब्रह्मविश्वामित्रशापाद् विम्रक्ता मव ॥ १३ ॥ ॐ मां मातृख्द्रपिण्ये अनर्गलमहिम-सहिताये ब्रह्मविश्वविश्वामित्रशापाद विश्वका भव ।। १४ ।। ॐ हीं श्रीं दुं दुर्गाये सं सर्वेश्वर्यकारिण्ये ब्रह्मविश्वविश्वामित्रशापाद् विद्युक्ता भव ॥ १५ ॥ ॐ ऐं हीं क्लीं नयः शिवाये अमेद्यकवचखरूपिण्ये ब्रह्मवशिष्ठविश्वामित्रशापाद विद्युक्ता भव ॥ १६ ॥ ॐ क्रीं काल्ये कालि हीं फट् खाहाये ऋग्वेदखरूपिण्ये ब्रह्मविश्वािशविश्वािमत्रशापाद् विम्रक्ता भव ।। १७ ।। ॐ ऐं हीं क्वीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरखतीखरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दर्गादेच्ये नमः ॥ १८॥

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेक्वर । चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संश्वयः ॥ १९ ॥ एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः । आत्मानं चैव दातारं श्वीणं कुर्यान्न संश्वयः ॥ २० ॥

इस प्रकार शापोद्धार करनेके अनन्तर अन्तर्मातृका-बिह्मितृका आदि न्यास करे, फिर श्रीदेवीका ध्यान करके रहस्यमें बताये अनुसार नौ कोष्ठोंवाले यन्त्रमें महालक्ष्मी आदिका पूजन करे, इसके बाद छः अङ्गोंसिहत दुर्गासप्तशतीका पाठ आरम्भ किया जाता है। कनच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य—ये ही सप्तशतीके छः अङ्ग माने गये हैं। इनके क्रममें भी मतमेद है। चिदम्बरसंहितामें पहले अर्गला, फिर कीलक तथा अन्तमें कनच पढ़नेका विधान है। किंतु योगरत्नावलीमें पाठका क्रम इससे भिन्न है। उसमें कनचको बीज, अर्गलाको शक्ति तथा कीलको कीलक संज्ञा दो गयी है। जिस प्रकार सब मन्त्रोंमें पहले बीजका, फिर शक्तिका तथा अन्तमें कीलकका उञ्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी पहले कनचक्दप बीजका, फिर अर्गलाक्टप

अर्गलं कीलकं चादी पठित्वा कवचं पठेत्।
 जप्या सप्तश्चती पश्चात् सिद्धिकामेन मन्त्रिणा।
 CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राक्तिका तथा अन्तमें कीलकरूप कीलकका क्रमशः पाठ होना चाहिये। * यहाँ इसी क्रमका अनुसरण किया गया है।



कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते ।
 कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्या महामनोः ॥

यथा सर्वमन्त्रेषु बीजराक्तिकीलकानां प्रथममुच्चारणं तथा सप्तशतीपाठेऽपि कवचार्गला-कीलकानां प्रथमं पाठः स्थात्।

इस प्रकार अनेक तन्त्रोंके अनुसार सप्तशतीके पाठका क्रम अनेक प्रकारका उपलब्ध होता है । ऐसी दशामें अपने देशमें पाठका जो क्रम पूर्वपरम्परासे प्रचलित हो, उसीका अनुसरण करना अच्छा है ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ देव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुण् छन्दः, चाह्यण्डा देवता, अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम्, दिग्बन्धदेवतास्तत्त्वम्, श्रीजगदम्बाग्रीत्यथे सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्राण्डकाये।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम्। यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे त्रृहि पितामह॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम्। देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छणुष्व महामुने॥२॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बु० क० पृष्ठ २२

शैलपुत्री प्रथमं च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। कृष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३॥ तृतीयं चन्द्रघण्टेति स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। पश्चमं सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्ट्रमम् ॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवहुर्गाः प्रकीर्तिताः। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणेव महात्मना ॥ ५॥ दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः श्रणं गताः॥ न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे। नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि॥ ७॥ येस्तु भक्तया स्पृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते । ये त्वां स्मर्नित देवेशि रक्षमे तान्न संशयः ॥ ८॥ बु॰ क॰ एड २३

प्रेतसंस्था महिषासना । चामुण्डा वाराही ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना॥ ९ माहेश्वरी वृपारूढा कौमारी शिखिवाहना। लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया॥ १०॥ ईश्वरी वृषवाहना। श्वेतरूपधरा देवी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ॥ १ १॥ ब्राह्मी इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः। नानाभरणशोभाढ्या नानारलोपशोभिताः ॥ १२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः। शक्षं चकं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥ १३॥ खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च। त्रियलं Acaday, Jamus मायुध्यस्तासम् ॥ १४॥

देवानां धारयन्त्यायुधानीत्थं हिताय च महाराद्रे महाघारपराक्रमे महोत्साहे महाबले महाभयविन शत्रुणां आग्नेय्यामाग्निदेवता मामेन्द्री नेर्ऋत्यां वाराही वारुणी वायव्यां कोमारी पातु मे वैष्णवी एवं श्ववाहना

वामपाश्वें चापराजिता। तु शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्धिन व्यवस्थिता॥२१॥ ललाटे च भुवों रक्षेद् यशास्विनी च भ्रवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके॥ २२॥ चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी । शिह्ननी तु शांकरी ॥ २३॥ कालिका रक्षेत्कर्णमूले च उत्तरोष्ठे च चर्चिका च सरस्वती ॥ २४॥ अधरे जिह्नायां चामृतकला रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका महामाया च तालुके ॥ २५॥ चित्रघण्टा च सर्वमङ्ला चिबुकं रक्षेद् वाचं मे कामाक्षी भदकाली ग्रीवायां

दु० फुष्ठ २६

नीलग्रीवा बहिःकण्ठे नलिकां नलकूबरी। स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाह्न मे वज्रधारिणी ॥ २७॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च। नखाञ्छलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी॥ २८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकविनाशिनी। हृदये लिलता देवी उदरे ग्रूलधारिणी॥२९॥ नाभी च कामिनी रक्षेद् ग्रह्मं ग्रह्मेश्वरी तथा। कामिका मेढूं ग्रदे महिषवाहिनी ॥३०॥ पूतना कट्यां भगवती रक्षेजानुनी विन्ध्यवासिनी। रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ॥ ३१॥

इ: ग्रह्म ग्रह्म ग्रह्म च पादपृष्ठे तु तेजसी। पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाध्य पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ॥३२॥ नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्रेवोध्वंकेशिनी। रोमकूपेषु कोबेरी त्वचं वागिश्वरी तथा॥३३॥ रक्तमज्ञावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती। अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥ ३४॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा। ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसंधिषु ॥३५॥ शुकं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा। अहंकारं मनो बुद्धि रक्षेन्मे धर्मधारिणी ॥३६॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् । वज्रहस्ता च मो स्ट्रेश्वरप्राणां सहस्याणां महा ॥ ३७॥

च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च सत्वं रजस्तमश्चेव रक्षेत्रारायणी धर्मं वाराही लक्ष्मीं च धनं विद्यां मे रक्षेत्पग्रन्भे रक्ष रक्षतु रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी सवतः विजतं कवचन मे जयन्ती रक्ष गच्छत्

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः। यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्। परमेश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भृतले पुमान् ॥ ४४॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः। त्रैलोक्ये तु भवेत्यूज्यः कवचेनावृतः प्रमान् ॥ ४५॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामिप दुर्लभम्। यः पठेतप्रयतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ४६॥ दैवी कला भवेत्तस्य त्रेलोक्येष्वपराजितः। जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लृताविस्फोटकादयः। स्थावरं जङ्गत्मं अद्भेत त्र इतिमा च्यापि ४३ त्यद्विषम् ॥ ४८॥

सर्वाणि जलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४९॥ खेचराश्चेव कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा। महाबलाः ॥५०॥ अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च यक्षगन्धवराक्षसाः । **ग्रहभूतिपशाचाश्च** भैरवादयः ॥ ५१॥ ब्रह्मराक्षसवेतालाः दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते। राज्ञस्तेजोवृद्धिकरं मानोन्नतिर्भवेद् कीर्तिमण्डितभूतले। सोऽपि जपत्सप्तशतीं

यावद्भमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् । तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः प्रत्रपौत्रिकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरेरपि हुर्लभम् । प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ॥५५॥ लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॥ ॐ ॥५६॥

इति देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥ १ ॥



अथार्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ॥

ॐ नमश्रण्डिकायै ॥

मार्कण्डेय उवाच

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
हुगां क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ १॥
जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते॥ २॥
मधुकेटभविद्राविविधातृवरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ ३॥

देहि जयं देहि यशो देहि यशो देहि जयं यशो सर्वसौभाग्यदायिान जयं देहि यशो देहि यशां

कु स्तुवद्भयो भक्तिपूर्वं त्वां चिण्डके व्याधिनाशिनि । स्पृ देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१०॥ चिण्डके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिह ॥ १९॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥१२॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुचकः। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १३॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जिहि॥१४॥ **सुरासुरिशरोरलानि** चृष्ट चरणेऽम्बिके रूपं देहि ज्ञसं इदेहि व्यक्ता देहि के इदिणों जिहि

डु० अ० पृष्ठ ३५

लक्ष्मीवन्तं यश्खन्तं जन देहि देहि यशो जयं 119811 चिण्डिके प्रणताय यशो देहि देहि हिषो चतुर्वक्त्रसंस्तुते देहि यशां सदाम्बिक राधद्रक्त्या देहि यशो चिलसुतानाथसंस्तुते देहि यशो देहि ातेसद्भावपूजिते। |

बु० अ० पृष्ठ

प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि । देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥ भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके। यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥ देहि जयं देहि मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४॥ तु महास्तोत्रं सप्तश्तातीसंख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५॥

इति देव्या अर्गलास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ कीलकम्

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्हुप् छन्दः, श्रीमहासरस्रती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं सप्तश्रतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः। ॐ नमश्र्यण्डिकाये।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे। श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे॥ १॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामिकीलकम् । सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः॥ २॥ सिद्धयन्त्युच्चाटनादीनि वस्तृनि सकलान्यपि। एतेन स्तवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति॥ ३॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दु० की० पृष्ठ

किंचिदपि नोषधं तत्र न सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ सिड्येत जाप्येन लोकशङ्कामिमां सिद्धयन्ति सर्वमेविमदं श्रमम्॥ निमन्त्रयामास स्तोत्रं वे चिण्डकायास्तु चकार यथावं िनयन्त्रणाम् ॥ च पुण्यस्य तां सवमव सज्ञयः 7 वा समाहितः॥ चतुदंश्यामष्ट्रम्यां कृष्णाया नान्यथेषा प्रतिगृह्णाति महादेवेन कीलितम्॥ निष्कीलां विधायेनां नित्यं जपित संस्फ्रटम्। गन्धवीं

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

दु० की० एष्ठ

कापीह जायते। चैवाप्यटतस्तस्य भयं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १०॥ नापमृत्युवशं प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति। ततो ज्ञात्वेव सम्पन्नमिदं प्रारम्यते बुधैः॥११॥ सोभाग्यादि च यत्किचिद् दृश्यते ललनाजने। तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः। समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥ यत्प्रसादेन सोभाग्यारोग्यसम्पदः। शतुहानिः परो मोक्षः स्त्यते सा न किं जनैः ॥ॐ॥१४॥

इति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

इसके अनन्तर रात्रिस्क्तका पाठ करना उचित है। पाठके आरम्भमें रात्रिस्क्त और

रात्रिस्क्तं पठेदादौ मध्ये सप्तश्चतीस्तवम् । प्रान्ते तु पठनीयं वै देवीस्क्तमिति क्रमः ॥

रात्रिस्किक बाद विनियोग, न्यास और ध्यानपूर्वक नवार्णमन्त्रका जप करके सप्तशतीका पाठ आरम्भ करना चाहिये। पाठके अन्तमं पुनः विधिपूर्वक नवार्णमन्त्रका जप करके देवीस्किका तथा तीनों रहस्योंका पाठ करना उचित है। कोई-कोई नवार्ण-जपके बाद रात्रिस्किका पाठ बतलाते हैं तथा अन्तमें भी देवीस्किके बाद नवार्ण-जपका औचित्य प्रतिपादन करते हैं; किंतु यह ठीक नहीं है। चिदम्बरसंहितामें कहा गया है—'मध्ये नवार्णपुटितं कृत्वा स्तोत्रं सदाम्यसेत्।' अर्थात् सप्तशतीका पाठ बीचमें हो और आदि-अन्तमें नवार्ण-जपसे उसको सम्पुटित कर दिया जाय। डामरतन्त्रमें यह बात अधिक स्पष्ट कर दी गयी है—

शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् । चण्डीं सप्तशतीं मध्ये सम्पुटोऽयम्रुदाहृतः ॥

अर्थात् आदि और अन्तमें सौ-सौ बार नवार्णमन्त्रका जप करे और मध्यमें सप्तशती दुर्गाका पाठ करे; यह सम्पुट कहा गया है। यदि आदि-अन्तमें रात्रिसूक्त और देवीसूक्तका पाठ हो और उसके पहले एवं अन्तमें नवार्ण-जप हो, तब तो वह पाठ नवार्ण-सम्पुटित नहीं कहला

सकता; क्योंकि जिससे सम्पुट हो उसके मध्यमें अन्य प्रकारके मन्त्रका प्रवेश नहीं होना चाहिये । | 🌶 यदि बीचमें रात्रिसूक्त और देवीसूक्त रहेंगे तो वह पाठ उन्हींसे सम्पुटित कहलायेगा; ऐसी दशामें डामरतन्त्र आदिके वचनोंसे स्पष्ट ही विरोध होगा। अतः पहले रात्रिसूक्त, फिर नवार्ण-जप, फिर न्यासपूर्वक सप्तराती-पाठ, फिर विधिवत् नवार्ण-जप, फिर क्रमशः देवीसूक्त एवं रहस्यत्रयका पाठ--यही कम ठीक है । रात्रिस्क्त भी दो प्रकारके हैं — वैदिक और तान्त्रिक । वैदिक रात्रिस्क्त ऋग्वेदकी आठ ऋचाएँ हैं और तान्त्रिक तो दुर्गासप्तरातीके प्रथमाध्यायमें ही है। यहाँ दोनों दिये जाते हैं। रात्रिदेवताके प्रतिपादक सूक्तको रात्रिस्क कहते हैं। यह रात्रिदेवी दो प्रकारकी हैं---एक जीवरात्रि और दूसरी ईश्वररात्रि । जीवरात्रि वही है, जिसमें प्रतिदिन जगत्के साधारण जीवोंका व्यवहार लुप्त होता है। दूसरी ईश्वररात्रि वह है, जिसमें ईश्वरके जगद्रूप व्यवहारका लोप होता है; उसीको कालरात्रि या महाप्रलयरात्रि कहते हैं। उस समय केवल बहा और उनकी मायाशक्ति, जिसे अञ्यक्त प्रकृति कहते हैं, शेष रहती है । इसकी अधिष्ठात्री देवी 'सुवनेश्वरी' हैं । 🛊 रात्रिस्कसे उन्हींका स्तवन होता है।

अथ वेदोक्तं रात्रिसक्तम्

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः। विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥ १ ॥

अह्ममायात्मिका रात्रिः परमेशलयात्मिका । तद्धिष्ठातृदेवी तु भुवनेशी प्रकीर्तिता ।। (देवीपुराण)
 नृ सृग्वेदः ''मं० १० अ० १० सू० १२७ मन्त्र १ से ८ तक ।

ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्धतः । ज्योतिषा बाधते तमः । २ । निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेढु हासते तमः ॥ ३ ॥ सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्मिहि । वृक्षे न वसति वयः ॥ ४ ॥

नि ग्रामासो अविक्षत नि पहुन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिद्धिनः ॥ ५ ॥

यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूम्यें। अथा नः सुतरा भव॥ ६॥

उप मा पोपिसत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उप ऋणेव यातयः olk Sakrill cademy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः। रात्रि स्तोमं न जिग्युषे॥ ८॥

अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् । निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥ १॥

ब्रह्मोवाच

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥ २॥
अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा॥ ३॥

त्वयैतद्धार्यते त्वयैतत्सृज्यते जगत्। हु॰ ए॰ **ए**ड विश्वं च सर्वदा॥ ४॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते विसृष्टी सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने। जगतोऽस्य जगन्मये॥ ५॥ तथा संहतिरूपान्ते महामाया महामेधा महास्मृतिः। महाविद्या महामोहा च भवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥ प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी। कालरात्रिर्महारात्रिमोंहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबोंधलक्षणा लजा प्रष्टिस्तथा तुष्टिस्तवं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८॥ खिंद्रनी ग्रुलिनी घोरा गदिनी चिक्रणी तथा। चापिनीं krit Acade नामस्यादीपरिवास्या ॥ ९ ॥

दु॰ एड ४५

सोम्यतराशेषसोम्यंभ्यस्त्वतिसुन्दरी। सोम्या परमेश्वरी ॥ १०॥ त्वमेव परमा किंचित कचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मके। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ १ १॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्। सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२॥ श्रीरयहणमहमीशान कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥ १३॥ त्विमत्थं प्रभावेः स्वेरुदारेदेवि मधुकेटभी ॥ १४॥ दुराधर्षावसुरौ मोहयेतौ

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु । बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १५॥

इति रात्रिसूक्तम्

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वैदेवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥ १॥

साव्रवीत्—अहं ब्रह्मस्वरूपिणी मत्तः प्रकृतिपुरुषा-त्मकं जगत्। ग्रून्यं चाग्रून्यं च॥ २॥

अहमानन्दानानन्दो । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत्वभारा देवति। अहमखिलं जगत्वभारा देवति। Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

वदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजा-हमनजाहम् । अधश्चोध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥ ४ ॥

अहं स्द्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्येस्त विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ विभिम् । अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥ ५ ॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि । अहं विष्णुमुरुकमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥ ६ ॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्खन्तः समुद्रे । य एवं वेद । स देवीं सम्पदमाप्नोति ॥ ७॥ ते देवा अञ्चवन्—नमो देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः। नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः समताम्॥ ८॥

तामग्निवणाँ तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् । देवीं श्रणं प्रपद्या-हुगाँ महेऽसुरान्नाश्यित्र्ये ते नमः॥ ९॥ वाचमजनयन्त देवा-देवीं स्तां विश्वरूपाः पश्चा वदन्ति नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना सा Edding Ammu. Digitized by S3 Thomas and 119011 दु के छ ४

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥ १ १॥ महालक्ष्मये च विद्यहे सर्वशक्तये च धीमहि। प्रचोदयात् ॥ १२॥ तन्नो देवी अदितिर्द्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥१३॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणि-मातिरिश्वाभामिनद्रः। ग्रहा हसा पुनर्ग्रहा मायया सकला विश्वमातादिविद्योम् ॥ १४॥ एषाऽऽत्मशाक्तः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्करा-धनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरित ॥ १५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥ १६॥ सेषाष्ट्री वसवः । सेषेकादश रुद्राः । सेषा द्वादशा-सेषा विश्वदेवाः सोमपा असोमपाश्च । सेषा असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सत्त्वरजस्तमांसि । सेषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी सेषा ग्रहनक्षत्रज्योर्त सेषा प्रजापतीन्द्रमनवः । कलाकाष्ट्रादिकालरूपिणी। तामहं प्रणोमि नित्यम्।

नुत्र प्र

पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥ १७॥ वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥ १८॥ एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायान्त परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराश्यः॥१९॥ वाङ्याया ब्रह्मसुस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्। सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्त्तीयकः नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः। विच्चे नवार्णकोऽणः स्यान्महदानन्ददायकः॥२०॥ प्रातःसूर्यसमप्रभाम्। हत्यण्डरीक्सध्यस्याँ Academ

दु० दे० पृष्ठ ५२ पाशाङ्कशधरां सोम्यां वरदाभयहस्तकाम् । त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥२१॥ नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् । महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥२२॥

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते । यस्या अन्तो न लभ्यते तस्माद्वच्यते अनन्ता। लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्माद्वच्यते यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकेव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका । एकेंव विश्वरूपिणी दुच्यते नेका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजेका मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता * ग्रून्यानां ग्रून्यसाक्षिणी। परतरं नास्ति सेषा हुर्गा प्रकीर्तिता ॥ २४॥ तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ २५॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफल-माप्नोति । इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽचा स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽचांसिद्धं विन्दति। न शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्पृतः । दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते । महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥ २६॥

^{😻 &#}x27;चिन्मसानन्दारं अी.स्क मस्ति है)और नक्ति ही व्यक्तिस्व है। त्यान्य स्वीता के thon USA

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्यति प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्यति । सायं प्रातः प्रयुज्जानो अपापो भवति । निर्शाये तुरीयसंध्यायां जप्ता वाक्सिद्धिर्भवति । नृतनायां प्रतिमायां जप्ता देवतासान्निध्यं भवति । प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधी जप्त्वा तरित । स महामृत्युं तरित वेद । इत्युपनिषत् ॥

अथ नवाणीविधिः

इस प्रकार रात्रिस्क और देव्यथर्वशीर्षका पाठ करनेके पश्चात् निम्नाङ्कितरूपसे नवार्ण-मन्त्रके त्रिनियोग, न्यास और ध्यान आदि करे—

श्रीगणपतिर्जयति। 'ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायन्युष्णि-गनुष्टुभञ्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, ऐ बीजम्, हीं श्वक्तिः, क्वीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।'

इसे पढ़कर जल गिराये।

नीचे छिखे न्यासवाक्योंमेंसे एक-एकका उचारण करके दाहिने हाथकी उँगछियोंसे कमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों चरण और नामि—इन अङ्गोंका स्पर्श करे।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिम्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्दुप्छन्दोम्यो नमः, मुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताम्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्मे । हीं श्रक्तये नमः, पादयोः । क्वीं कीलकाय नमः, नाभौ ।

'ॐ ऐं हीं इहीं चामुण्डायें विच्चे'—इस मूलमन्त्रसे हार्थोकी शुद्धि करके
CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

करन्यासः

करन्यासमें हाथकी विभिन्न उँगलियों, हथेलियों और हाथके पृष्ठभागमें मन्त्रोंका न्यास (स्थापन) किया जाता है। इसी प्रकार अङ्गन्यासमें हृदयादि अङ्गोंमें मन्त्रोंकी स्थापना होती है। मन्त्रोंको चेतन और मूर्तिमान् मानकर उन-उन अङ्गोंका नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओंका ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है, ऐसा करनेसे पाठ या जय करनेवाला खयं मन्त्रमय होकर मन्त्र-देवताओंहारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर भीतरकी शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विन्ततापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

उँ ऐं अनुष्ठाभ्यां नमः (दोनों हाणोंकी तर्जनी अँगुलियोंसे दोनों अँगुठोंका स्पर्श)

उँ हीं तर्जनीभ्यां नमः (दोनों हार्योंके अँगूठोंसे दोनों तर्जनी अँगुलियोंका स्पर्श)।

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (अँगूठोंसे मध्यमा अँगुलियोंका स्पर्श)।

ॐ चामुण्डाये अनामिकाभ्यां नमः (अनामिका अँगुलियोंका स्पर्श)।

उँ विच्चे कनिष्ठिकाम्यां नमः (कनिष्ठिका अँगुलियोंका स्पर्श)।

उँ ऐं हीं क्लीं चामुण्डायें विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके

पृष्ठभागोंका परस्पर स्पर्श)।

हृद्यादिन्यासः

इसमें दाहिने हाथकी पाँचों उँगलियोंसे 'हृदय' आदि अङ्गोंका स्पर्श किया जाता है। CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA उँ एँ हृद्याय नमः (दाहिने हायकी पाँचों उँगलियोंसे हृदयका स्पर्श)।

ॐ हीं शिरसे खाहा (सिरका स्पर्श)।

ॐ क्लीं शिखाये वषट् (शिखाका स्पर्श)।

ॐ चामुण्डाये कवचाय हुम् (दाहिने हाथकी उँगिलयोंसे बार्ये कंघेका और बार्ये हाथकी उँगिलयोंसे दाहिने कंघेका साथ ही स्पर्श)।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दाहिने हाथकी उँगलियोंके अप्रभागसे दोनों नेत्रों और छछाटके मध्यभागका स्पर्श)।

उँ ऐं हीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे अख़ाय फट् (यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथको सिरके ऊपरसे बायीं ओरसे पीछेकी ओर ले जाकर दाहिनी ओरसे आगेकी ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा उँगिक्टियोंसे बायें हाथकी हथेकीपर ताळी बजाये)।

अक्षरन्यासः

निम्नाङ्कित वाक्योंको पढ़कर क्रमशः शिखा आदिका दाहिने हाथकी उँगलियोंसे स्पर्श करे।

ॐ ऐं नमः, शिलायाम् । ॐ हीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्वीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः, वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यें नमः, वामनासापुटे । ॐ विं तसः, मुखे । ॐ इचें नमः, गुद्धे । इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्रसे आठ बार व्यापक (दोनों हायोंद्वारा सिरसे लेकर परितक्तके सब अङ्गोंका स्पर्श) करे, फिर प्रत्येक दिशामें चुढकी बजाते हुए न्यास करे—

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्ये नमः । ॐ ऐं आग्नेय्ये नमः । ॐ हीं दक्षिणाये नमः । ॐ हीं नैर्ऋत्ये नमः । ॐ क्लीं प्रतीच्ये नमः । ॐ क्लीं वायव्ये नमः । ॐ चामुण्डाये उदीच्ये नमः । ॐ चामुण्डाये ऐशान्ये नमः । ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे ऊर्ध्वाये नमः । ॐ ऐं हीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे भूम्ये नमः ।*

ध्यानम्

खड्नं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छ्लं युग्रुण्डीं चिरः ग्रह्वं संदघतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृतास् । नीलाञ्मद्यतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तीत्स्वपिते हरी कमलजो हन्तुं मधुं कैटमस् ॥ १ ॥

* यहाँ प्रचलित परम्पराके अनुसार न्यासविधि संक्षेपसे दी गयी है। जो विस्तारसे करना चाहें, वे अन्यत्रसे सारस्वतन्यास, मातृकागणन्यास, षड्देवीन्यास, ब्रह्मादिन्यास, महालक्ष्म्यादिन्यास, वीजमन्त्रन्यास, विलोमबीजन्यास, मन्त्रव्याप्तिन्यास आदि अन्य प्रकारके न्यास भी कर सकते हैं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA अक्षस्रक्परशं गदेषुकृतिशं पशं धनुः कृण्डिकां दण्डं शक्तिमसि च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनस् । ग्रूलं पाशसुदर्शने च दथतीं हस्तैः प्रसन्धाननां सेवे सैरिभमदिंनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थितास् ॥ २ ॥ घण्टाग्रूलहलानि शङ्क्षसस्रे चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तिनलसच्छीतांश्रुत्तस्यप्रमास् । गौरीदेहससुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्मादिदैत्यार्दिनीस् ॥ ३ ॥

किर 'ऐं हीं अक्षमालिकायें नयः' इस मन्त्रसे मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे-

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिण। चतुर्वर्गस्त्विय न्यस्तरसमान्मे सिद्धिदा भव।। ॐ अविष्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्धचर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धि परिकल्पस्-परिकद्भप्रस् स्रोबस्त्राह्मा, hmu. Digitized by S3 Foundation USA दु० स० पृष्ठ ६०

इसके बाद 'ॐ ऐं हीं क्षी चामुण्डाये विच्चे' इस मन्त्रका १०८ बार जप करे और गुह्यातिगुह्यगोष्त्री त्वं गृह्याणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिमेवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ इस क्लोकको पदकर देवीके वाम हस्तमें जप निवेदन करे ।

सप्तशतीन्यासः

तदनन्तर सप्तशतीके विनियोग, न्यास और ध्यान करने चाहिये । न्यासकी प्रणाछी पूर्ववत् है—

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां बद्यविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहा-सरस्वत्यो देवताः, गायत्रयुष्णिगनुष्टुभक्छन्दांसि, नन्दाञ्चाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामयों बीजानि, अग्निवायुद्धर्यास्तस्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ खिंद्रनी श्रुलिनी घोरा गिंद्रनी चिंद्रणी तथा। शिंद्वनी चापिनी बाणभ्रुशुण्डीपरिघायुधा।। अङ्गुष्ठास्यां नमः। ॐ श्रूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चास्विके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।। तर्जनीस्यां नमः। CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चिष्डिके रक्ष दक्षिणे।
श्रामणेनात्मग्रूहस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।। मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भ्रुवम्।। अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खङ्गग्रूहुगदादीनि यानि चाह्याणि तेऽिम्बके।
करपहरुवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।। कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वभक्तिसमन्विते।
मयेभ्यस्नाहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

खिंद्गिनी श्रुलिनी घोरा०—हृदयाय नमः।
श्रुलेन पाहि नो देवि०—श्रिरसे स्वाहा।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च०—श्रिखाये वषट्।
सौम्यानि यानि रूपाणि०—कवचाय हुम्।
खड्गश्रूलगदादीनि०—नेत्रत्रयाय वौषट्।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे०—अस्ताय फट्।

घ्यानम्

विद्युदामसमप्रमां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कत्त्याभिः Sanskrit Acक्काजान्त्रान्नेद्वविद्युसद्भान्नाम् स्थानिकास्य

हस्तैश्रकगदासिखेटविशिखांश्रापं गुणं तर्जनीं बिश्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गा त्रिनेत्रां भजे ॥

इसके बाद प्रथम चित्रका विनियोग और ध्यान करके 'मार्कण्डेय उवाच' से सप्तरातीका पाठ आरम्भ करे । प्रत्येक चित्रका विनियोग मूल सप्तरातीके साथ ही दिया गया है तथा प्रत्येक अध्यायके आरम्भमें ध्यान भी दे दिया गया है । पाठ प्रेमपूर्वक भगवतीका ध्यान करते हुए करे । मीठा खर, अक्षरोंका स्पष्ट उच्चारण, पर्दोक्ता विभाग, उत्तम खर, धीरता, एक लयके साथ बोलना—ये सब पाठकोंके गुण हैं । अं जो पाठ करते समय रागपूर्वक गाता, उच्चारणमें जल्दबाजी करता, सिर हिलाता, अपने हाथसे लिखी हुई पुस्तकपर पाठ करता, अर्थकी जानकारी नहीं रखता और अधूरा ही मन्त्र कण्ठस्थ करता है, वह पाठ करनेवालोंमें अध्य माना गया है । पाठका विराम हो जाय तो पुनः प्रति बार पूरे अध्यायका पाठ करे । यदि प्रमादवश अध्यायके बीचमें पाठका विराम हो जाय तो पुनः प्रति बार पूरे अध्यायका पाठ करे । अज्ञानवश पुस्तक हाथमें

पदच्छेदस्त # माधुर्यमक्षरव्यक्तिः सस्वरः । लयसमर्थे च षडेते धैर्य पाठका गुणाः ॥ शीघी शिर:कम्पी तथा लिखितपाठकः । षडेते पाठकाधमाः ॥ अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च विरमेत्पठन । İ यावन पूर्यतेऽध्यायस्तावन्न विरामो भवति यदि प्रमादादध्याये पठेत्सर्व पुनरध्यायमारभ्य CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA लेकर पाठ करनेपर आधा ही फल होता है । स्तोत्रका पाठ मानसिक नहीं, वाचिक होना चाहिये । वाणीसे उसका स्पष्ट उच्चारण ही उत्तम माना गया है । अब बहुत जोर-जोरसे बोलना तथा पाठमें उतावली करना वर्जित है । यतपूर्वक शुद्ध एवं स्थिर चित्तसे पाठ करना चाहिये । पदि पाठ कण्ठस्थ न हो तो पुस्तकसे करे । अपने हाथसे लिखे हुए अथवा ब्राह्मणेतर पुरुषके लिखे हुए स्तोत्रका पाठ न करे । पदि एक सहस्रसे अधिक श्लोकों या मन्त्रोंका प्रन्थ हो तो पुस्तक देखकर ही पाठ करे; इससे कम श्लोक हों तो उन्हें कण्ठस्थ करके बिना पुस्तकके भी पाठ किया जा सकता है । § अध्याय समाप्त होनेपर 'इति', 'वध', 'अध्याय' तथा 'समाप्त' शब्दका उच्चारण नहीं करना चाहिये । +

--- softhere --

 अज्ञानात्थापिते हस्ते पाठे ह्यर्धफलं ध्रवम् । पठेत्स्तोत्रं वाचिकं प्रशस्यते ॥ परिवर्जयेत् । 🕇 उद्यै:पाठं निषिद्धं स्यात्त्वरां गुद्धेनाचलचित्तेन पठितव्यं प्रयत्नतः ॥ 🙏 कण्ठस्थपाठाभावे 🛚 तु पुस्तकोपरि वाचयेत्। **.** लिखितं स्तोत्रं नाब्राह्मणलिपिं पठेत ॥ स्वयं शस्तं सहस्रादधिकं यदि । १ पुस्तके वाचनं ततो 'न्यूनस्य तु भवेद् वाचनं पुस्तकं विना ॥ + अध्यायकी पूर्ति होनेपर यों कहना चाहिये- 'श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये

प्रथम: ॐ तत्सत् ।' इसी प्रकार 'द्वितीयः' 'तृतीयः' आदि कहकर समाप्त करना चाहिये। CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA ॥ श्रीदुर्गायै नमः॥

अथ श्रीदुर्गासप्तराती

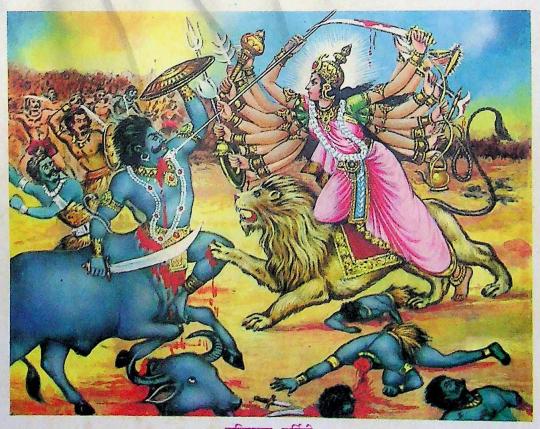
क्यमोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ प्रथमचरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्तदन्तिका बीजम्, अग्निस्तन्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे प्रथम-चरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

खड्गं चकगदेषुचापपरिघाञ्छलं भुगुण्डीं शिरः शङ्खं संदधतीं करेस्निनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।



<mark>महिषासुर मर्दिनी</mark> CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

नीलाश्मचुतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तोत्स्विपते हरों कमलजो हन्तुं मधुं केटभम् ॥ ॐ नमश्चिण्डिकाये ॥

'ॐ ऐं' मार्कण्डेय उवाच ॥ १ ॥

सार्वाणः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्ट्रमः।
निशामय तहत्पत्ति विस्तराद् गदतो मम॥ २॥
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स वभूव महाभागः सार्वाणस्तनयो रवेः॥ ३॥
स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चेत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूतसमस्ते क्षितिमण्डले॥ ४॥

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान् । शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा॥ ५॥ बभृवुः युद्धमतिप्रबलदण्डिनः । तेरभवद् तस्य न्यूनैरिप स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥ स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत्। आक्रान्तः स महाभागस्तेस्तदा प्रबलारिभिः॥ ७॥ अमात्येर्बिलिभिर्दृष्टेर्दुर्बलस्य दुरात्मिभः। कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः॥८॥ ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स

M.

द्विजवर्यस्य मेधसः। तत्राश्रममद्राक्षीद् प्रशान्तश्वापदाकीणं सुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १०॥ तस्थों कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः। विचरंस्तस्मिन्म्निवराश्रमे ॥ १ १॥ **इतश्चेतश्च** मोऽचिन्तयत्तदा ममत्वाकृष्ट्चेतनंः। तत्र मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ १२॥ मद्भृतयस्तैरसद्वृत्तेर्धर्मतः पाल्यते स प्रधानो कान भोगानुपलप्स्यते। यातः प्रसादधनभोजनैः ॥ १४॥ पाढान्तर-समत्वाकृष्टमानसः।

अ० १ एड

अनुवृत्तिं घुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्। असम्यग्वययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१५॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति। एतचान्यच सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ १६॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः। स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥ १७॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे। इत्याकण्यं वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ १८॥ प्रत्यवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो चपम् ॥१९॥

वैश्य उवाच ॥ २०॥

समाधिनाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥२१॥

अ० १ **१**ष्ठ पुत्रदारेनिरस्तश्च धनलोमादसाधुभिः। विहीनश्च धनैद्रिः पुत्रेरादाय मे धनम् ॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्ध्रभिः। सोऽहं न वेद्यि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ २३॥ खजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः। कि नु तेषां यहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥ २४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ २५॥ राजोवाच ॥ २६॥

यैर्निरस्तो भवाँल्छुब्धेः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥ २८॥

वैश्य उवाच ॥ २९ ॥

भवानस्मद्गतं वचः ॥ ३०॥ प्राह करोमि न बध्नाति मम निष्टुरतां मनः। संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धेर्निराकृतः ॥३१॥ पतिस्वजनहादं च हादि तेष्वेव किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥३२॥ चित्तं विग्रणेष्विप बन्धुषु यत्प्रेमप्रवणं तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३४॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥

ततस्ती सहितो विप्र तं मुनि समुपस्थितो ॥३६॥

समाधिर्नाम वैश्योऽसो स च पाधिवसत्तमः। कृत्वा त तो यथान्यायं यथाई तेन संविदम् ॥३७॥ उपविष्टो कथाः कश्चिचकतुर्वेश्यपाधिवो ॥३८॥ राजोबाच ॥३९॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥ द्वःखाय यन्मे मनसः स्विचत्तायत्ततां विना । ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्विखलेष्विष ॥४१॥ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतनमुनिसत्तम । अयं च निकृतंः पुत्रेदिरिर्भृत्येस्तथोज्ज्ञितः ॥४२॥ स्वजनेन च संत्यक्तसेषु हादी तथाप्यति । एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुः स्वितौ ॥४३॥

१. पा०--निष्कृतः।

दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ। तिकमेतंन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि॥४४॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मृहता॥४५॥

ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥

ज्ञानमित समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥४७॥ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् । दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥४८॥ केचिद्रिवा तथा रात्रो प्राणिनस्तुल्यहृष्ट्यः । ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते निहं केवलम् ॥४९॥

१. पा॰ —तत्केनैत॰ । २. पा॰ —याश्च । ३. पा॰ —यान्ति । ४. पा॰ — किं नु ते ।

सर्वे पशुपक्षिमृगादयः। ज्ञानिनः च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५०॥ च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः। सति पश्येतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥५१॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानिप मनुजन्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ ५२॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यिस। ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥५३॥ तथापि संसारस्थितिकारिणां महामायाप्रभावेण कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥५४॥

१ पा० - नन्वेते । २ पा० - रिणः ।

संमोह्यते हरेश्चेषां महामाया तया हि सा ॥ ५५॥ भगवती देवी ज्ञानिनामपि चेतांसि मोहाय महामाया बलादाकृष्य जगदेतचराचरम् ॥५६॥ विसृज्यते विश्वं तया मुक्तये सेषा भवति नृणां वरदा प्रसन्ना मुक्तेईतुभूता सनातनी 119911 विद्या परमा सा सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८॥ संसारबन्धहेतुश्च

राजोवाच ॥ ५९ ॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥६०॥ व्रवीति कथमुत्पन्ना सां कर्मास्याश्च किं द्विज । यत्प्रभावां च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्रवा ॥६१॥

१. पा - चैतत पटिने अधिकाडिक से दिल्ली स्थानिक Digital देन के कि कि मिला कि पा अधिक के पा अधिक पर कि पा अधिक प

तत्सर्व श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥६२॥

जगन्मृतिंस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥ तत्समुत्पत्तिर्बहुधा तथापि श्र्यतां कार्यसिद्धयर्थमाविर्भवति सा सा नित्याप्याभिधीयते तदा लोके विष्णुर्जगत्येकाणंवीकृते ॥ ६६॥ यदा शेषमभजत्कल्पान्ते मधुकेटभी ॥६७॥ घोरौ विख्यातौ द्वावसुरी विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणस्चतो । नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥६८॥ दृष्ट्या तावसुरो चोग्रो प्रसुप्तं च जनार्दनम्।
तृष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः॥६९॥
विबोधनार्थाय हरेईरिनेत्रकृतालयाम्।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्॥७०॥
निद्रां भगवतीं विष्णोरत्तलां तेजसः प्रभुः॥७९॥

ब्रह्मोवाच ॥ ७२ ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः॥७४॥

१. किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद ही 'ब्रह्मोवाच' है। तथा 'निद्रां भगवर्ती' इस श्लोकार्धके स्थानमें— 'स्तौमि निद्रां भगवर्ती विष्णीस्तुरुतिक्रसः।।। Action प्राक्षका प्र

सावित्री त्वं देवी जननी परा। संध्यां त्वयैतत्सृज्यते त्वयैतद्धार्यते जगत्॥ ७५॥ विश्वं त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा त्वयैतत्पाल्यते देवि स्थितिरूपा च पालने ॥ ७६॥ सृष्टिरूपा त्वं संहतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये। महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७॥ महाविद्या भवती महादेवी महासुरी। महामोहा सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८॥ कालरात्रिमंहारात्रिमोंहरात्रिश्च श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं हीस्त्वं बुद्धिबोंधलक्षणा ॥ ७९॥ १. पा०-सा त्वं । २. पा०-महेश्वरी ।

लजा पृष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च। खड्गिनी ग्रुलिनी घोरा गदिनी चिक्रणी तथा॥ ८०॥ बाणभुगुण्डीपरिघायुधा । शिक्षनी चापिनी सौम्यतराशेषसौम्यभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥८१॥ परमेश्वरी। त्वमेव परमा परापराणां किंचित्कविद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥८२॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदां। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्तिं यो जगत्॥८३॥ सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः। श्रीरग्रहणमहमीशान

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्। प्रभावैः स्वेहदारेदेवि त्वमित्थं संस्तुता मधुकेटभी। दुराधर्षावसुरो मोहयतौ जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु महासुरौ ॥८७॥ हन्तुमेतो क्रियतामस्य ऋषिरुवाच ॥ ८८॥ देवी तामसी तत्र तदा प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मध्केटभी। नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः 119011

निर्गम्य दर्शने तस्थो ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। उत्तस्थो च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः॥९९॥

तः स ददृशे च तौ। दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ॥९२॥ एकार्णवेऽहिशयनात्ततः मधुकैटभौ जिनतो समी। ब्रह्माणं कोधरक्तेक्षणांवर्तुं युयुधे भगवान् हरिः॥९३॥ ततस्ताभ्यां बाहुप्रहरणो पञ्चवर्षसहस्राणि महामायाविमोहितौ ॥ ९४॥ तावप्यतिबलोनमत्तौ वरोऽस्मत्तो वियतामिति केशवम् ॥९५॥ उक्तवन्तौ

श्रीभगवानुवाचं नी ९६॥

भवेतामद्य मे तुष्टों मम वध्यावुभावि ॥ ९७॥ किमन्येन वरेणात्र एताविद्ध वृतं ममं॥ ९८॥

१. पा॰—णो वन्तुं. IK ह्वास्त्रां Achtein), Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषिरुवाच ॥ ९९॥

विश्विताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥१००॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षंणः । आवां जिह न यत्रोवीं सिलिलेन परिप्लुता ॥१०१॥ ऋषिरुवाच ॥ १०२॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शृङ्खचकगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वे च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः॥१०३॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। प्रभावमस्यादेव्यास्तुभूयः शृणु वदामि ते॥ऍॐ१०४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः॥ १॥ उवाच १४, अर्धश्लोकाः २४, श्लोकाः ६६, एवमादितः १०४॥

१. मार्कण्डेयपुराणकी कई प्रतियोंमें यहाँ 'प्रीतौ खस्तव युद्धेन स्ठाच्यस्त्वं मृत्युरावयोः।' इतना अधिक पाठ है।

दितीयोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिर्महालक्ष्मीर्देवता उष्णिक् छन्दः शाकम्भरी शक्तिः दुर्गा बीजं वायुस्तत्त्वं यजुर्वेदः स्वरूपं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। ग्रूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तेः प्रसन्नाननां सेवे सेरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

'ॐ हीं' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

पूर्णमब्दशतं देवासुरमभूचुद्धं देवानां महिषेऽसुराणामधिपे तत्रासुरेर्महावीर्येर्देवसैन्यं च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः॥ पद्मयोनि देवाः प्रजापतिम् । पराजिता यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥ गतास्तत्र पुरस्कृत्य तयोस्तद्वनमहिषासुरचेष्टितम्। यथावृत्तं कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५॥ त्रिदशाः Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

थ० २ पृष्ठ ८४

सर्वे तेन महिषेण मत्यां सर्वममरारिविचेष्टितम्। कथितं शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥ देवानां वचांसि मधुसूदनः निशम्य भूकुटीकुटिलाननों॥ शम्भ्रश्च ततोऽतिकोपपूर्णस्य चिक्रणो महत्तेजो निश्वकाम ब्रह्मणः देवानां श्कादीनां

ज्वलन्तमिव पर्वतम्। कूटं तेजसः ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२॥ सुरास्तव दहशुस्ते सर्वदेवशरीरजम्। तत्तेजः अतुलं तत्र व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३॥ तदभृन्नारी एकस्थं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्। चामवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥१४॥ स्तनयोर्युगमं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्। च जङ्घोरू नितम्बस्तेजमा स्वः ॥ १५॥ पादौ ब्रह्मणस्तेजसा नासिका॥ १६॥

स्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा 119911 जज्ञे संध्ययोस्तेजः चैव देवानां सम्भवस्तेजसां समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। महिषादिताः ॥ १९॥ प्रापुरमरा गूलं गूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। समुत्पाचे कृष्णः तस्ये शक्ति दत्तवांश्चापं

१. कई प्रतियोंमें इसके बाद 'ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च । ऊचुर्जयजयेत्युच्चैर्ज-यन्तीं ते जयैषिणः ॥' इतना पाठ अधिक है । २. पा०—स्य ।

कुलिशादमराधिपः समुत्पाद्यं सहस्राक्षो घण्टामेरावताद् गजात् ॥ २२॥ चाम्बुपतिर्ददौ दण्डं पाशं कालदण्डाचमां प्रजापतिश्वाक्षमालां ददौ ब्रह्मा निजरश्मीन् समस्तरोमकूपेषु दिवाकरः कालश्च दत्तवान् खडगं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥२५॥ तथा सर्वबाहुषु तथा ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥ १. पा॰-च्य । २. पा॰-तस्य चर्म ।

अ० २ १४

अङगुलीयकरतानि समस्ताखङ्ग विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥२७॥ तथाभेद्यं अस्राण्यनेकरूपाणि मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२८॥ अम्लानपङ्कजां चातिशोभनम्। पङ्कःजं अददज्जलधिसस्यै रत्नानि विविधानि च ॥ २९॥ सिंहं वाहनं ददावशुन्यं महामणिविभूषितम् ॥३०॥ सर्वनागेशो शेषश्च पृथिवीमिमाम् । नागहारं ददो धत्ते यः भूषणेरायुधेस्तथा ॥३१॥

ननादोचेः सहसेहः सम्मानिता साइहासं कुत्नमापूरितं नभः ॥३२॥ घोरेण नादेन प्रतिशब्दो महानभूत्। अमायतातिमहता चकम्पिरे ॥ ३३॥ समुद्राश्च लोकाः सकला महीधराः सकलाश्च वसुधा सिंहवाहिनीम् ॥ ३४॥ देवाश्च तामृचुः मुदा भक्तिनम्रात्ममूर्तयः तुष्ट्वर्प्पनयश्चेनां त्रेलोक्यममरारयः ॥ ३५॥ संक्षुब्धं समस्त **संनदा**खिलसेन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३६॥ अ॰ २ **ए**ड ९०

शब्दमशेषेरसुरैर्वृतः। तं ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७॥ पादाकान्त्या नतसुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् । क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिः स्वनेन ताम् ॥ ३८॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्। युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥३९॥ ततः प्रववृते मुक्तेरादीपितदिगन्तरम्। शस्त्रास्त्रेर्बहुधा महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४०॥ चामरश्चान्येश्चतुरङ्गबलान्वितः। युयुधे रथानामयुतेः महासरः ॥ ४ ॥।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

महाहतुः सहस्रेण अयुध्यतायुतानां नियुतेरसिलोमा 118511 पञ्चाराद्यिश्व परिवारितः ॥ ४३॥ गजवाजिसहस्रोघेरनेकैः युद्धे तस्मिन्नयुध्यत F कारया पत्राशद्भिरथायुतेः ॥ ४४॥ बिडालाख्योऽयुतानां च रथाना संयुग रथनागहयेर्वृताः ॥ ४५॥ तत्रायुतशो देव्या सह तत्र

१. पा॰-कैरप्रदर्शनः । २. किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद 'वृतः कालो रथानां च रणे पञ्चाशतायुतैः । युयुषे संयुगे तत्र तावद्भिः परिवारितः ॥' इतना अधिक पाठ है ।

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभूनमहिषासुरः। तोमरैभिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७॥ संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः। केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥४८॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः। सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ४९॥ लीलयेव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षणी। अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुर्गिभिः ॥५०॥ मुमोचासुरदेहेषु श्रुबाण्यस्नाणि सोऽपि कुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेश्रारी ॥५१॥
CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

थ० २ एड ९३

वनेष्विव चचारामुरसैन्येषु हुताश्नः। निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥५२॥ गुणाः श्तसहस्रशः। सम्भूता सदाः परग्रुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥५३॥ युयुधुस्ते देवीशक्तयुपर्रहिताः नाशयन्तोऽसुरगणान् राङ्वांस्तथापरे ॥५४॥ गणाः पटहान् अवादयन्त तस्मिन् युद्धमहोत्सवे। तथेवान्ये मृदङ्गाश्च त्रिश्लेन देवी गदया ततो निजघान शतशो महासुरान्। घण्टास्वनविमोहितान् ॥५६॥ चैवान्यान्

अ० २ १८ असुरान् सुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकषेयत् । केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥५७॥ निपातेन गदया हताः ॥५८॥ भृशं केचिह्रधिरं केचिन्निपतिता भिन्नाः भूमो केचिद्रणाजिरे ॥५९॥ शरीघेण निरन्तराः मुमुचुस्निदशार्दनाः। श्येनातुकारिणः प्राणान् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे मध्ये विदारिताः महासुराः ॥६१॥ विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे

१. पा० - सेनानु० । शल्यानु० । शैलानु० ।

केचिद्देव्या एकबाह्नाक्षिचरणाः द्धिधा छिन्नेऽपि चान्ये शिरिस पतिताः पुनरुत्थिताः ॥६२॥ युयुधुर्देच्या गृहीतपरमायुधाः। क्वन्धा तूर्यलयाश्रिताः ॥६३॥ ननृतुश्चापरे युद्ध तत्र कबन्धाशिक्षन्निश्रसः देवीमन्ये महासुराः भाषन्तो रथनागाश्वेरसुरेश्च पातितै महारणः ॥६५॥ यत्राभूत्स साभवत्तत्र शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥

१. किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद 'रुधिरौवविलुताङ्गाः संग्रामे लोमहर्षणे ।' इतना पाठ अधिक है।

व्यव २ एड १

तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका क्षयं यथा विक्तस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥ सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेशरः। विचिन्वति ॥६८॥ शरीरेभ्योऽमरारीणामस्नुनिव गणेश्व तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरेः। तुतुंषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ॐ॥ ६९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषापुरसैन्यवधो

नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

उवाच १, रलोकाः ६८, एवम् ६९, एवमादितः १७३॥



हतीयोऽधायः

ध्यानम्

ॐउद्यद्वानुसहस्रकान्तिमरुणक्षोमां शिरोमालिकां रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् । हस्ताब्जेर्दधर्तीं त्रिनेत्रविलसद्वक्तारविन्दिश्रयं देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दिस्थिताम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षरः कोपाद्ययौ योद्धमथाम्बिकाम्॥२॥ व ३ १८

श्रारवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः। देवीं यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः॥३॥ तस्यिच्छत्त्वा ततो देवी लीलयैव शरोतकरान्। जघान तुरगान् बाणेर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छितम्। गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः॥ ५॥ चैव विव्याध सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसाराथिः। तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥ अभ्यधावत खड्गेन तीक्ष्णधारेण सिंहमाहत्य भुजे सन्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७॥ आजघान

सुज पफाल चपनन्दन कोपादरुणलोचनः॥ ८॥ गुल B भद्रकाल्यां ततस्तत्तु महासुरः तेजोभी रविबिम्बिमवाम्बरात् ॥ ९॥ जाज्वल्यमानं देवी तदापतच्छलं तेन नीतं स श्तधा तस्मिन्महावीर्ये महिष्स्य चमूपतो गजारूढश्चामरस्रिदशार्दनः ॥ १ १॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्वतम् । पातयामास पा०-तेन तच्छतथा नीतं।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

०० इ इ

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः ग्रूलं बाणेस्तदिप साच्छिनत् ॥ १३॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चोस्निदशारिणा ॥ १४॥ युद्यमानी ततस्ती तु तस्मान्नागान्महीं गती। युधातेऽतिसंरब्धो प्रहारेरितदारुणैः ॥ १५॥ ततो वेगात खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥ १६॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तम् ष्टितलेश्चेव sanskrit Acad मालश्चा icritized by निपातितः ॥ १७॥ है

कुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चो दतम्। वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्नं तथान्धकम् ॥ १८॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहतुम्। त्रिग्रलेन च परमेश्वरी ॥ १९॥ जघान विडालस्यासिना कायात्पातयामास शिरः। शरोर्नेन्ये दुर्मुखं चोभो यमक्षयंम् ॥ २०॥ संक्षीयमाणे स्वसेन्ये महिषासुरः। तु सक्षेण त्रासयामास तान् गणान् ॥२१॥

१. इसके बाद किसी-किसी प्रतिमें-

^{&#}x27;कालं च कालदण्डेन कालरात्रिरपातयत् । उग्रदर्शनमत्युग्रैः खड्गपातैरताडयत् ॥

असिनैवासिलोमानमच्छिदत्सा रणोत्सवे । गणैः सिंहेन देव्या च जयक्ष्वेडाकृतोत्सवैः ॥

[—]ये दो रलोक अधिक हैं।

अ० ३

18

खुरक्षेपेस्तथापरान्। कांश्चिचुण्डप्रहारेण लाङ्गुलताडितांश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान्॥ २२॥ कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन भूतले ॥ २३॥ निःश्वासपवनेनान्याच् पातयामास प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चके ततोऽम्बिका ॥ २४॥ सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः शृङ्गाभ्यां पर्वतानुचांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य लाडगूलेनाहतश्चाब्धिः

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खंण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७॥ कोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्। चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥ २८॥ तस्य वै पाशं तं बबन्ध माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ २९॥ सिंहोऽभवत्सचो यावत्तस्याम्बिका तावतपुरुषः देवी पुरुषं चिच्छेद सार्दं ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१॥

१ पा० - खण्डखण्डं।

जगर्ज चकर्ष महासिंहं तं निरक्टन्तत ॥३२॥ खड्गेन देवी वपुरास्थितः। माहिषं महासुरो भूयो त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥ तथैव क्षोभयामास जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्। पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४॥ पपौ पुनः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। चासुरः विषाणाभ्यां च चिक्षेप चिण्डकां प्रति सूधरान् ॥३५॥ तान प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।

देव्युवाच॥ ३७॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूह मधु यावित्वाम्यहम्। मया त्विय हतेऽत्रेव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥३८॥ ऋषिष्वाच॥३६॥

एवमुक्ता समुत्पत्य साऽऽक् हा ते महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च ग्रूलेनेनमताडयत् ॥४०॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः । अर्धानिष्कान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥४९॥ अर्धनिष्कान्त एवासी युध्यमानो महासुरः । तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥४२॥

इतना अधिक पाठ है।

१. पा०-एवाति देव्या।

२ किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद—

प्वं स मिह्यो नाम ससैन्यः ससुद्धद्रणः । त्रैलोक्यं मोहयित्वा तु तया देव्या विनाशितः ॥

त्रैलोक्यस्थैस्तदा भूतैर्मिह्ये विनिपातिते । जयेत्युक्तं ततः सर्वेः सदेवासुरमानवैः ॥'

अ० ३ १**०**६ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्। प्रहर्षं च परं जग्मः सकला देवतागणाः॥४३॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः। जग्रगन्धर्वपतयो नन्दतुश्चाप्सरोगणाः॥४४॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽघ्यायः॥ ३॥

उवाच ३, क्लोकाः ४१, एवम् ४४, एवमादितः २१७॥



बतुर्योऽध्यायः

ध्यानस्

ॐकालाभ्रामां कटाक्षेरिक्किस्यदां मोलिबद्धेन्दुरेखां शक्कं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमिप करेस्द्रहन्तीं त्रिनेत्राम्। सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमिखलं तेजसा पूरयन्तीं ध्यायद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामेः॥ 'ॐ' ऋषिक्षंच ॥ १ ॥

शकादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मिन सुरारिबले च देव्या।

१ किसी-किसी प्रतिमें 'ऋषिचवाच' के बाद—

'ततः सुरगणाः सर्वे देव्या इन्द्रपुरोगमाः । स्तुतिमारेभिरे कर्त्वे निहते महिषासुरे ॥'

इतना पाठ अधिक है ।

१०८ ४८ ४०

तां तुष्टुचुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततिमदं जगदात्मशक्त्या निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमृत्यां तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विद्धातु शुभानि सा नः॥३॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च। सा चिण्डकाखिलजगत्परिपालनाय नाश्य skrit त्राश्य सम्मानाय स्था अस्ति । १४ ॥

या श्रीः खयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु कुलजनप्रभवस्य तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वस् ॥ ५ ॥ रूपमचिन्त्यमेतत तव चातिवीर्यमसुरक्षयकारि किं चाहवेषु तवाद्धतानि समस्तजगतां हरिहरादिभिरप्यपारा सर्वाश्रयाचिलमिदं

अ० ४ **१ड** १०

समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि। स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-सचार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः। मोक्षार्थिभिर्म्निमिरस्तसमस्तदोषे-विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥ श्बात्मका सुविमलार्यज्ञषां निधान-मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।

भगवती देवी भवभावनाय परमातिहन्त्री ॥ १०॥ सर्वजगतां विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गभवसागरनौरसङ्गा। दुर्गासि केंटभारिहदयैककृताधिवासा **जाजिमोलिकतप्रतिष्ठा** त्वमेव **इंषत्सहासमम**लं बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् । प्रहतमात्तरुषा सहसा महिषासुरेण॥ १२॥ भुकुटीकराल-ाङ्कसदृशच्छवि

थुर पुष्ठ पुष्ठ

प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाश्यमि कोपवती कुलानि। विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४॥ ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदित धर्मवर्गः। धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येषां सदाभ्यदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।

प्रयाति च ततो भवतीप्रसादा-ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६॥ हरिस भीतिमशेषजन्तोः हुगें स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्रचदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥ एभिईतैर्जगद्वपैति मुखं कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्। दिवं संग्राममृत्यमधिगम्य मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥ १८॥ न भवती प्रकरोति

लोकान प्रयान्त रिपवोऽपि हि शस्त्रपृता मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥ १९॥ खड्गप्रभानिकरविस्फ्ररणैस्तथोग्रैः श्रुलायकान्तिनिवहेन हशोऽसुराणाम्। विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥ दांवे तव दुवेत्तवत्तरामनं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः। हतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितेव दया त्वयेत्थम् ॥ २१॥ तेऽस्य भवत् पराक्रमस्य श्त्रभयकायंतिहारि

चित्ते कृपा समरानिष्ट्रता च दृष्टा त्वय्येव देवि वरदे भ्रुवनत्रयेऽपि ॥ २२॥ त्रेलोक्यमेतदखिलं रिप्रनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्धाने तेऽपि हत्वा। नीता दिवं रिप्रगणा भयमप्यपास्त-मस्माकपुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३॥ ग्रलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥२४॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चिण्डके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मग्रलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि ते रक्षास्मांस्तथा भ्रवम् ॥ २६॥ पृष्ठ ध्रुष्ट खड्गग्रूलगदादीनि यानि चाम्राणि तेऽम्बिके। करपछ्वसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥२७॥

ऋषिरुवाच ॥ २८॥

एवं स्तुता सुरैदिंग्येः कुसुमेर्नन्दनोद्धवैः । अचिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनेः ॥ २९॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिग्येधूपेस्तुं धूपिता । प्राह प्रसादसुसुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ ३०॥

देव्युवाच ॥ ३१॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ३२॥

१. पा॰—पै: सुधूपिता । २. मार्कण्डेयपुराणकी आधुनिक प्रतियोंमें — 'ददाम्यहमतिप्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता ।' इतना पाठ अधिक है । किसी-किसी प्रतिमें — 'कर्तव्यमपरं यच दुष्करं तत्र विद्राहे । इत्याकण्यं बचो देव्याः प्रत्यूचुस्ते दिवौकसः ॥' इतना और अधिक पाठ है ।

देवा उचुः ॥ ३३ ॥

कृतं सर्वं न किंचिदविश्वाच्यते ॥ ३४॥ भगवत्या निहतः शतुरस्माकं महिषासुरः। यदयं यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥३५॥ संस्पृता संस्पृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः। यश्च मर्त्यः स्तवैरोभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३६॥ वित्तर्दिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्। तस्य वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७॥

ऋषिरुवाच ॥ ३८॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः।
तथत्युक्त्वाः भद्रकाली बभुवान्तर्हिताः नृप ॥३९॥

अ० ४ ११८ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितेषिणी॥४०॥
पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्धता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदेत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः॥४९॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयागिते॥हींॐ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिनीम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४ ॥ उवाच ५, अर्धश्लोको २, श्लोकाः ३५, एवम् ४२, एवमादितः २५९॥

१. किसी-किसी प्रतिमें 'गौरीदेहा सा' 'गौरी देहा सा' इत्यादि पाठ भी उपलब्ध होते हैं

पडचमोऽध्यायः

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीउत्तरचित्त्रिस्य रुद्रऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, श्रामरी वीजम्, सर्यस्तन्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महासरस्वतीशीत्यर्थे उत्तर-चरित्रपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ घण्टाग्रूलहलानि शङ्कमुमले चकं धनुः मायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तिवलमच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् । गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-पूर्वामत्र सुरुखतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

N.C.

'ॐ क्लीं' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

मदबलाश्रयात्॥ तद्वदिधकारं पवनार्दें च भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ विनिर्धृता सर्वे निराकृताः धिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम्॥ तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृतां खिलाः

१ किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति इतना पाढ अधिक है।

इति कृत्वा मितं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्। जगमुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुबुः॥ ७॥ देवा उचाः॥ ८॥

नमा देव्ये महादेव्ये शिवाये सततं नमः। नमः प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्मताम्॥ ९॥ रोद्राये नमो नित्याये गोर्ये धात्र्ये नमो नमः। ज्योत्स्नाये चेन्दुरूषिण्ये सुखाये सततं नमः॥ १०॥ कल्याण्ये प्रणतां वृद्ध्ये सिद्ध्ये कुर्मो नमो नमः। नैऋत्ये भूभृतां लक्ष्म्ये शर्वाण्ये ते नमो नमः॥ १९॥

१. वृद्धयै सिद्धयै च प्रणतां देवीं प्रति नमः नतिं कुर्म इत्यन्वयः । यद् वा प्रणमन्तीति प्रणन्तः

तेषां प्रणतामिति षष्ठीबहुबनुनार्त्तं बोध्यम् । इति ज्ञान्तनव्यां टीकायां स्पष्टम् ध्यणताः इति पाठान्तरम् ।

दुर्गाये दुर्गपाराये साराये सर्वकारिण्ये। ख्यात्ये तथेव कृष्णाये धूम्राये सततं नमः॥१२॥ अतिसौम्यातिरौद्राये नतास्तस्ये नमो नमः। जगत्प्रतिष्ठाय देव्ये कृत्ये नमो नमः॥ १३॥ देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्य ।१४। नमस्तस्य ।१५। नमस्तस्य नमो नमः ॥ सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै ।१७। नमस्तस्यै ।१८। नमस्तस्यै नमो नमः॥ देवी सर्वभृतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।२०। नमस्तस्यै।२१। नमस्तस्यै नमो नमः॥ देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण

नमस्तस्ये।२३। नमस्तस्ये।२४। नमस्तस्ये नमो नमः ॥ या देवी सर्वभृतेषु क्षधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्ये ।२६। नमस्तस्ये ।२७। नमस्तस्ये नमो नमः॥ या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।२९। नमस्तस्यै।३०। नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।३२। नमस्तस्यै।३३। नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्ये ।३५। नमस्तस्ये ।३६। नमस्तस्ये नमो नमः ॥ या देवी सर्वभृतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्य ।३८। नमस्तस्य ।३९। नमस्तस्य नमा नमः॥ थ० ५ १२४

जातिरूपेण सर्वभृतेषु नमस्तस्यै ।४१। नमस्तस्यै ।४२। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ सर्वभूतेषु लजारूपेण नमस्तस्ये ।४४। नमस्तस्ये ।४५। नमस्तस्ये नमो नमः ॥ सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।४७। नमस्तस्यै।४८। नमस्तस्यै नमो नमः॥ सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण नमस्तस्यै ।५०। नमस्तस्यै ।५१। नमस्तस्यै नमो नमः॥ सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण नमस्तस्ये ।५३। नमस्तस्ये ।५४। नमस्तस्ये नमो नमः॥ सर्वभ्रतेष

स० ५ एड १२५ नमस्तस्यै । ५६। नमस्तस्यै । ५७। नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्य ।५९। नमस्तस्य ।६०। नमस्तस्य नमो नमः॥ या देवी सर्वभृतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।६२। नमस्तस्यै।६३। नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।६५। नमस्तस्यै।६६। नमस्तस्यै नमो नमः॥ या देवी सर्वभृतेषु तृष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै।६८। नमस्तस्यै।६९। नमस्तस्यै नमो नमः॥ देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्य ।७१। नमस्तस्य ।७२। नमस्तस्य नमो नमः॥ अ० ५ पृष्ठ १२६

सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ।७४। नमस्तस्यै ।७५। नमस्तस्यै नमो नमः॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाविलेषु सततं तस्ये व्याप्तिदेव्ये नमो नमः ॥ ७७॥ चितिरूपेण या कृत्स्रमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै ।७८। नमस्तस्यै ।७९। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ सेविता। त्तथा ग्रमहेत्रशिश्वरी करोत 7: ग्रमानि मद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८१॥ साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापिते-

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥८२॥ ऋषिरुवाच॥८३॥

स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती। स्रातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥८४॥ साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रभंविद्धः स्तूयतेऽत्र का। श्रीरकोशतश्रास्याः समुद्भृतात्रवीच्छिवा ॥८५॥ स्तोत्रं ममैतत कियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः। समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥८६॥ देवैः संमेतेः श्रारिकोशां चत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका। कोशिंकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥८७॥

- एस्त्रें . JK Bankker Acade hyl Jamminu Digitized by S3 Foundation USA

वार पृष्ठ १२८

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्। ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यो शुम्भिनशुम्भयोः ॥८९॥ ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा। काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥९०॥ कचिद्रुपं दृष्टं केनचिद्वत्तमम्। काप्यसो देवी यहातां चासुरेश्वर ॥ ९१॥ स्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्तिषा सा त तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमहिति॥९२॥ रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै

म् । त्रेलोक्ये त समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते ग्रहे ॥९३॥ । १११ । ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात । पारिजाततस्थायं तथैवोचैःश्रवा हयः ॥ ९४॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे। रत्नभूतिमहानीतं यदासिद्वेधसोऽद्धतम् ॥९५॥ है निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्। किञ्जलिकर्नी ददौ चान्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥९६॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति। तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥ ९७॥

मृत्योस्त्रकान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता। पाशः सल्लिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥९८॥

अ० ५ १३० निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः। विक्तरंपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी॥९९॥ एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते। स्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते॥१००॥ ऋषिक्वाच॥१०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः । प्रेषयामास सुग्रीवं द्वतं देव्या महासुरंम् ॥१०२॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम । यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोहेशेऽतिशोभने । सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥१०४॥

१ पा०—श्वापि । २ पा०—इसके बाद कहीं-कहीं 'ग्रुम्भ उवाच' इतना अधिक पाठ है।
३ पा०—तांच देवीं ततः।

द्त उवाच ॥ १०५॥

शुम्भस्त्रेलोक्ये देत्येश्वरः परमेश्वरः। प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशामिहागतः ॥१०६॥ देवयोनिषु सवांसु यः सदा अन्याहताज्ञः निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥१०७॥ मम त्रैलोक्यमिखलं मम देवा वशानुगाः यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक ॥१०८॥ पृथक वश्यान्यशेषतः त्रैलोक्ये वररतानि मम गजरंबं देवेन्द्रवाहनम् ॥१०९॥ हेत्वा ममामरैः। क्षीरोदमथनोद्भृतमश्वरतं समर्पितम् ॥११०॥ तत्प्रणिपत्य उचेःश्रवससंज्ञं

अव ५ इड १३२

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥१९१॥ स्रीरतभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥११२॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्। भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥११३॥ परमेश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्। एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥११४॥

ऋषिरुवाच ॥ ११५॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगी।
हुर्गा भगवती भद्रा यथेदं धार्यते जगत्॥११६॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

Ed .

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम्। त्रैलोक्याधिपतिः ग्रुम्भो निग्रुम्भश्चापि तादृशः ॥११८॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रयते कथम्। श्रयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥११९॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति। यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥१२०॥ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः। मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणि गृह्णातु मे लघु ॥१२१॥ दूत उवाच ॥ १२२ ॥

अविलिप्तासि मैवं त्वं देवि बृहि ममाग्रतः।

त्रैलोक्ये कः प्रमांस्तिष्ठेदग्रे ग्रुम्मिनशुम्भयोः ॥१२३॥ अन्येषामिष दैत्यानां सर्वे देघा न वे युधि। तिष्ठनित सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥१२४॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे। शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यास सम्मुखम् ॥१२५॥ सा त्वं गच्छ मयेवोक्ता पार्श्वं शुम्भिनशुम्भयोः। गमिष्यसि ॥१२६॥ केशाकर्षणनिर्धृतगौरवा मा

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

एवमेतद् बली ग्रुम्भो निग्रुम्भश्चातिवीर्यवान् । किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥१२८॥

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः। तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तंत् ॥ॐ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

> उवाच ९, त्रिपान्मन्त्राः ६६, श्लोकाः ५४, एवम् १२९, एवमादितः ३८८॥



क्षेत्रायः

ध्यानम्

ॐ नागाधिश्वरिवष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-भाखद्देहलतां दिवाकरिनमां नेत्रत्रयोद्धासिताम् । मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कानिलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

इत्याकण्यं वचो देव्याः स द्वतोऽमर्षपूरितः। समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात्॥२॥

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकण्यां सुरराट् ततः। सकोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ ३॥ हे धूम्रलोचनाग्रु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः। तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्नलाम् ॥ ४ ॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः। स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥

तेनाज्ञप्रस्ततः शीघं स दैत्यो धूम्रलोचनः। वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां हुतं ययौ ॥ ७ ॥ स दृष्टा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम्। जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भिनशुम्भयोः॥ ८॥ न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपेष्यति। ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्नलाम्॥९॥ देन्युवाच॥१०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः। बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥१९॥

ऋषिरुवाच ॥ १२॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः। हुंकारेणेव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥१३॥ अथ कृद्धं महासेन्यमसुराणां तथाम्बिका। ववर्ष सायकेस्तीक्ष्णेस्तथा शक्तिपरश्वधेः॥१४॥

१. पा०-तथाम्बिकाम्।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ततो धतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्। पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः॥१५॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्। आकंम्य चाधेरेणान्यान् स जघानं महासुरान् ॥१६॥ केषांचित्पाटयामास नखेः कोष्ठानि तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् कृतास्तेन विच्छिन्नबाहुशिरसः तथापरे। कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८॥ संधरं

१. पा॰—आक्रान्त्या । २. पा॰—चरणेनान्यान् । ३. यहाँ तीन तरहके पाठान्तर मिलते हैं—संज्ञधानः निज्ञधानः ज्ञधान सुमहा॰ । ४. पा॰—केशरी । बंगला प्रतिमें सब जगह 'केसरी' और 'केसर' शब्दमें तालव्य (कार्य) कार्र प्रदेशी रहे रे Cademy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वं क्षयं महात्मना नीतं तद्बलं देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९॥ धूम्रलोचनम् । निहतं देव्या कृत्स्रं देवीकेसरिणा ततः ॥ २०॥ प्रस्फुरिताधरः। दैत्याधिपतिः शुस्भः च तो चण्डमुण्डो महासुरो ॥ २१॥ बलेर्बह्यभंः परिवारितौ मुण्ड च सा समानीयतां केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संश्यो सर्वेरसुरेविनिहन्यताम् ॥ २३॥ तदाशेषायुधेः

१, ¶o──ऌ: | CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते। श्रीष्ट्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम्।ॐ।२४।

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भ-निशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥ उवाच ४, श्लोकाः २०, एवम् २४, एवमादितः॥४१२॥



सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम् ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपिठतं श्रुण्वतीं श्यामलाङ्गी न्यसौकाङ्घिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकी वादयन्ताम्। कह्णागबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां मातङ्गीं राञ्चपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्धासिमालाम् ॥ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ ततो देत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः। आज्ञप्रास्ते चतुरङ्गवलोपेता ययुरभ्युचतायुधाः ॥ २

ततो देवीमीषद्वासां व्यवस्थिताम्। काञ्चने ॥ ३॥ शैलेन्द्रशृङ्गे महति सिंहस्योपरि समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः हुड्डा तां आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ४ कोपं चकारोच्चेरम्बिका तानरीन मंषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५॥ वदनं चास्या भुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद् इतम् । करालवदना विनिष्कान्तासिपाशिनी॥६॥ नरमालाविभूषणा विचित्रखट्वाङ्गधरा ग्रष्कमांसातिभैरवा ॥ ७॥ द्वीपिचर्मपरीधाना

१. पा०-मसी०।

अ० पृष्ठ पृष्ठ

आतिविस्तारवदना जिह्नाललनभीषणा नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८॥ वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् मुरारीणामभक्षयत् तद्बलम् ॥ पार्षिणग्राहाङ्कराग्राहियोधघण्टासमन्वितान् समादायैकहस्तेन चिक्षेप मुखे त्रगे रथं दशनैश्चर्ययन्त्यंतिभेरवम् ॥ ११॥ वक्त्रे **ग्रीवायामथ** चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् पादनाक्रम्य

१. पा०-यत्यति ।

अ० <u>७</u> १४५

तथासुरैः। च शस्त्राणि महास्त्राणि तैर्मुक्तानि रुषा दशनैर्मिथतान्यपि ॥ १३॥ मुखेन जगाह तद् बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्। 119811 ममर्राभक्षयचान्यानन्यांश्वाताडयत्तथा अप्तिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। दन्तायाभिहतास्तथा ॥ १५॥ जग्मुर्विनाशमसुरा तद् बलं सर्वमसुराणां निपातितम्। चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १६॥ **रारवर्षेर्महाभीमैभीमाक्षीं** तां क्षिप्तेः चकेश्व मुण्डः

CC-0 JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अ० ७ **१**ड

तानि चक्राण्यनेकानि विश्वमानानि तन्मुखम्। घनोदरम् ॥ १८॥ बसुर्यथार्कबिम्बानि सुबहुनि भैरवनादिनी जहासातिरुषा करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्जवला ॥ १९॥ काली चण्डमधावत हं देवी महासिं गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनंत् ॥२०॥ चण्डं निपातितम्। अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्टा तमप्यपातयद्भमो सा खड्गाभिहतं सेन्यं दृष्टा चण्डं निपातितम्। सुमहावीर्यं दिशो मेजे भयात्रम् ॥ २२॥

१. शान्तनवी टीकाकारने यहाँ एक श्लोक अधिक पाठ माना है। जो इस प्रकार है— 'छिन्ने शिरिस दैत्येन्द्रश्चके नादं सुभैरवम्। तेन नादेन महता त्रासितं भुवनत्रयम्॥'

शिरश्रण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डादृहासिमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥
मया तवात्रोपहृतो चण्डमुण्डो महापञ्च।
गुद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हिनिष्यसि॥२४॥
ऋषिष्वाच॥२५॥

तावानीतौ ततो दृष्टा चण्डमुण्डो महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी लिलतं चण्डिका वचः ॥२६॥
यस्माचण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोक ख्याता देवि भविष्यसि ॥ॐ॥ २७॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये चण्डमुण्डवघो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

खवाच २, इलोकाः २५, एवम्-२७, एवमादितः ४३९॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammun, Digitized by S3 Foundation USA

अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐअरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कश्वाणचापहस्ताम्। अणिमादिभिरावृतां मयूखेरहमित्येव विभावये भवानीम्॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥ मुण्डे

षडशीतिरुदायुधाः।

सर्वबलेंदेंत्याः

अ० ८

स्वबलेर्वृताः ॥ ४ चतुरशीतिर्नियांन्तु कम्बूनां कुलानि कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि धीम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया दोईदा मौर्याः कालकयास्तथासुराः। कालका निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम सजा शुस्भो भैरवशासनः। इत्याज्ञाप्यासुरपतिः महासेन्यसहस्रेर्बहुभिर्वृतः॥ ७॥ निर्जगाम दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । चाण्डका आयान्तं धरणीगगनान्तरम्॥ ज्यास्वनैः पूरयामास महानादमतीव सिंहो कृतवान् तंतः तंत्रादमम्बिका चोपचंहयत्॥ घण्टास्वनेन

१. पा॰ एट-लाप्रे Sanskrit Academy, Jamminu. Digitized by S3 Foundation USA

अ० ८ ५७

धनुज्यांसिंहघण्टानां काली जिग्ये विस्तारितानना निनादैर्भीषणैः दैत्यसैन्येश्वतुर्दशम्। निनादमुपश्रुत्य परिवारिताः ॥ ११॥ काली सिंहस्तथा विनाशाय सुरद्विषाम्। एतस्मिन्नन्तरे भूप भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः 119811 ब्रह्मेश्यहविष्णुनां तथेन्द्रस्य श्रीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रपेश्चण्डिकां देवस्य यद्र्पं हि तच्छाक्तरसुरान् हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः

अ० ८ १<u>५</u>१

साभिधीयते ॥ १५॥ ब्रह्मणः शक्तिब्रह्माणी त्रिशूलवरधारिणी। माहेश्वरी वृषार्व्हा चन्द्रेखाविभूषणा ॥ १६॥ महाहिवलया प्राप्ता शांकेहस्ता च मयूरवरवाहना योद्धमभ्याययो दैत्यानम्बिका ग्रहरूपिणी ॥ १७॥ वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता शृङ्खचकगदाशाङ्गेखड्गहस्ताभ्युपाययौ विभ्रतों । स्वपं या यज्ञेवाराहमतुलं शक्तिः साप्याययो तत्र वाराहीं विभ्रती ततुम् ॥ १९॥ बिभ्रती **चिं**सहस्य सहशं सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तथेवेन्द्री यथा शकस्तथैव परिवृतस्ताभिरीशानो देवशाक्तिभिः ततः हन्यन्तामसुराः शीघं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥ २२॥ विनिष्कान्तातिभीषणा। देवीशरीराचु शिवाशतिननादिनी ॥ २३॥ चण्डिकाशक्तिरत्युया ध्रम्रजिटलमीशानमपराजिता। च्छ भगवन पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २४॥ दानवावतिगर्वितो। च निश्रम्भं समुपस्थिताः ॥ २५॥ युद्धाय दानवास्तत्र देवाः लभतां

जीवितामिच्छथ ॥ २६॥ यदि पातालं प्रयात युद्धकाङ्किणः चेद्रवन्ता बलावलेपादथ वः ॥ २७॥ पिशितेन तृप्यन्तु मञ्छिवाः यतो नियुक्तो दीत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् । शिवदृतीति लोकेऽस्मिस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः। जग्मुर्यत्रं कात्यायनी स्थिता ॥ २९॥ अमर्षापूरिता प्रथममेवाग्रे श्रश्नक्यष्टिवृष्टिभिः ततः देवीममरारयः ॥ ३०॥ ववष्रेरुद्धतामषोस्तां च तान् प्रहितान् बाणाञ्छलशांकेपरश्वधान्। लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तेमंहेषुभिः

१. पा॰ - जन्मयत् । K Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रलपातविदारितान्। काली खट्वाङ्गपोथितांश्चारीच कुर्वती 113711 कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतोजसः ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन धावाति ॥ ३३॥ येन स्म वैष्णवी त्रिग्रलेन चक्रेण माहेश्वरी तथा दैत्याञ्जघान कोमारी तथा शक्त्यातिकोपना 113811 दैत्यदानवाः ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो पेतुर्विदारिताः रुधिरोघप्रवर्षिणः ॥३५॥ पृथ्वया तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः वाराहमृत्यां न्यपतंश्वकेण विदारिताः ॥ ३६॥ नखेर्विदारितांश्चान्यान्

अ० ८ **१९**९

नादापूर्णादेगम्बरा ॥ ३७॥ नारासिंही चचाराजों शिवदूत्यभिदूषिताः चण्डादृहासेरसुराः पतितांस्तांश्चखादाथ तदा ॥३८॥ सा मर्दयन्तं कुद महासुरान् **द**ष्ट्राभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः 113811 देत्यान् मातृगणार्दितान् हड्डा क़दो महासुरः ॥ ४०॥ रक्तबीजो भूमी श्रारतः रक्तबिन्द्रयंदा पतत्यस्य मेदिन्यां 118311 तत्त्रमाणस्तदासुरः समुत्पताते गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः रक्तवीजमताड्यत् ॥४२॥ स्ववज्रण

१. पा॰ -- वास्ति । JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बहु द्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३॥ श्रीराद्रक्तबिन्दवः यावन्तः जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४४॥ तावन्तः प्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥४५॥ समं क्षतमस्य सहस्रशः जाताः ववाह चक्रणाभिजघान ताड्यामास रुधिरस्रावसम्भवेः

१. पा०-तस्य।

्डा० ८ १५७

तत्त्रमाणेर्महासुरैः ॥ ४८॥ जगद्व्याप्तं सहस्रशो शक्त्या जवान कोंमारी वाराही च तथासिना। त्रिश्लेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९॥ माहेश्वरी स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत पृथक्। कोपसमाविष्टो रक्तवीजो महासुरः ॥ ५०॥ मातः बहुधा शक्तिश्र्लादिभिर्भुवि तस्याहतस्य यो वै रक्तोघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१॥ तैश्रामुरामृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत। व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्टा चण्डिका प्राह सत्वरा कालीं चामुण्डे विस्तीणं वदनं

9. uro-accC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अ० ८ **५**ड १५८

रक्तबिन्द्रनमहासुरान्। मच्छस्रपातसम्मूतान त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४॥ प्रतीच्छ तदुत्पन्नान्महासुरान् । रणे गमिष्यति ॥ ५५॥ क्षीणरक्तो क्षयं चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे। तां ततो देवी ग्रुलेनाभिजघान तम् ॥५६॥ जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्। तत्र चण्डिकाम् ॥ ५७॥ ततोऽसावाजघानाथ गर्दया न चास्या वेदनां चके गदापातोऽल्पिकामपि सुसाव देहातु बहु

१. पा०-वेगिता । २. इसके बाद कहीं-कहीं 'ऋषिरवाच' इतना अधिक पाठ है।

अ० ८ **४**ड १५९

येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९॥ समुद्गता तांश्वखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्। ग्रुलेन वज्रेण बाणेरिसिमर्ऋष्टिभिः ॥६०॥ जघान रक्तबीजं तं चासुण्डापीतशोणितम्। पपात महीपृष्ठे शस्त्रसंङसमाहतः ॥६१॥ नीरक्तश्च महीपाल रक्तवीजो महासुरः हर्षमतुलमवापुस्निदशा नृप ॥ ६२॥ ततस्ते तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ॐ॥६३॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽघ्यायः ॥ ८ ॥ उवाच १, अर्घश्ठोकः १, श्लोकाः ६१, एवम् ६३, एवमादितः ५०२॥

नवमोऽध्यायः

ध्यानम्

अ वन्धूककाञ्चननिमं रुचिराक्षमालां

पाशाङ्करोो च वरदां निजवाहुदण्डैः ।

विभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम। देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्चितम्॥२॥

'ॐ' राजोवाच ॥ १ ॥

भूयश्रेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते। चकार शुम्मो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः॥३॥ ऋषिरुवाच॥॥॥

रक्तबीजे निपातिते कोपमतुलं चकार हतेष्वन्येषु निशुम्भश्च चाहवे महासेन्यं विलोक्यामर्षमुद्रहन् अभ्यधावन्निशुम्भोऽय मुख्ययामुरसेनया ॥ पार्श्वयोश्व विष्ठ महासुराः तस्याग्रतस्तथा संदष्टीष्ठपुटाः देवीसुपाययुः शुम्भोऽपि स्वबलेर्वृतः। महावीर्यः चाण्डिकां कोपातकृत्वा युदं तु मात्रिमः

थ १ १

ततो युद्धमतीवासीद् देव्या शुम्मनिशुम्भयोः। वर्षतोः॥ ९॥ मेघयोरिव श्रवर्षमतीवोग्रं चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका खंशरोत्करैः । चाङ्गेषु शस्त्रोधैरसुरेश्वरौ ॥ १०॥ ताडयामास निशुम्मो निशितं सडगं चर्म चादाय सुप्रभम्। अताडयनमूर्धिन सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११॥ वाहने देवी क्षरप्रेणासिम्तमम्। ताडिते निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ १२॥ छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्ति चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ १३॥

१. पा०-- अञ्चलकरेः।

प्रह १६३ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ ग्रलं जग्राह मुप्टिपातेन देवी तचाप्यचूर्णयत् ॥ १४॥ आयातं आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति। सापि देव्या त्रिशुलेन भिन्ना भस्मत्वमागता परशहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गनम्। देवी बाणोघरपातयत भूतले॥ १६॥ भीमविकमे तस्मिन्निपतिते भूमी निशुम्मे संकुदः प्रययो हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७॥ रथस्यस्तथात्युचैर्यहीतपरमायुधेः। **भुजैरष्टाभिरतुलै**व्याप्यादीषं न्भः ॥ १८॥

R. M. Sanskitt Academy, Vannamu. Digitized by S3 Foundation USA

समालोक्य दुःसहम् ॥ १९॥ निजघण्टास्वनेन क्कुभो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः प्राक्सनास्तं

१. पा॰-स्योपदिशो।

तदा जयत्यभिहितं देवेराकाशसंस्थितेः ॥ २४॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिमीषणा। आयान्ती विककृटामा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिः स्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्। चिच्छेद खशरेरुग्रैः शतशोऽय सहस्रशः॥२७॥ ततः सा चिण्डका कुद्धा चुलेनाभिजघान तम्। स तदाभिहतो भूमी मूर्च्छितो निपपात ह ॥ २८॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः। आजघान शरेर्देवीं कार्ली केसरिणं तथा ॥ २९॥ भ० १८६ १६६

दनुजेश्वरः। चण्डिकाम् ॥३०॥ दितिजश्छादयामास चिच्छेद तानि चकाणि खशरेः सायकांश्च तान् ॥३१॥ गदामादाय चिण्डकाम् । वेगेन देत्यसेनासमावृतः वै गदां समाददे ॥३३॥ शितधारेण H हृदयान्निःसृतोऽपरः।

पृष्ठ १६७

महावीर्यस्तिष्ठेति महाबलो वदन् ॥ ३५॥ पुरुषो निष्कामतो देवी प्रहस्य खनवत्ततः शिरश्चिच्छेद खडगेन ततोऽसावपतद्भवि ॥३६॥ सिंहश्रखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णिश्रोधरान् । ततः असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥३७॥ केचित्रेशुर्महासुराः कोमारीशक्तिनिर्भिन्नाः ब्रह्माणीमन्त्रपूर्तेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३८॥ माहेश्वरीत्रिग्रलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे। वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता खंण्डं खण्डं च चकेण वैष्णव्या दानवाः चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन

[.] To - TREETONK Sack Concentration and Digitized by S3 Foundation USA

य० १६८ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् । मक्षिताश्चापरे कालीशिवद्वतीसृगाधिपैः ॥ॐ॥ ४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये निशुम्भवघो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ६ ॥ उवाच २, श्लोकाः ३९, एवं ४१, एवमादितः ५४३ ॥



दशमोऽध्यायः

ध्यानस्

उत्तप्तहमरुचिरां रविचन्द्रवाह्न-धनुश्शरयुताङ्करापाश्चरूलम्। दधतीं शिवशक्तिरूपां रम्येर्भुजेश्व कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥ 'ॐ' ऋषिठवाच ॥ १ ॥

निशुम्भं निहतं दृष्टा भ्रातरं प्राणसम्मितम् । हन्यमानं बलं चेव शुम्भः कुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बलावलेपांद् दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह। अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनी॥३॥ देन्युबाच॥४॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा। पश्येता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयंः॥ ५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम्। तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका॥ ६॥

देव्युवाच ॥ ७ ॥

अहं विभृत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता। तत्संहृतं मयेकेव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव॥८॥

१. पा॰-पदु॰ । २. इसके बाद किसी-किसी प्रतिमें 'ऋषिकवाच' इतना अधिक पाढ है।

चीभयोः देव्याः प्रववृत सर्वदेवानामसुराणां दारुणम् ॥ १०॥ शस्त्रेस्तथास्त्रेश्चेव सर्वलोकभयङ्करम् ॥ मुमुचे यान्यथाम्बिका शतशो दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः॥ १२॥ तानि बभञ्ज शरशतेर्देवीमाच्छादयत

१. पा॰-हु॰ (२. पा॰-सा च।

अ० १० १७

शक्तिमथाददे। मिप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १५॥ शतचन्द्र **शितेबाणिश्चमं** घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८॥ सुद्गर चेच्छेदापततस्तस्य सोऽभ्यधावत्तां

१. पा॰—यत तां इन्द्रं देखा॰। २. इसके बाद किसी-किसी प्रतिमें—'अधांध्य पातयामास रयं सारयिना सह।' इतना अधिक पाछ है।

१७३

देवी सा तलप्रहाराभिहतो पुनरेव **हैत्यराजः** प्रगृह्योचेर्देवीं गगनमास्थितः तेन निराधारा तदा कृत्वा

१. पा०-वेगवान् ।

१७४ १० १०

दुष्टात्मा चिण्डकानिधनेच्छया॥२५॥ सर्वदैत्यजनेश्वरम्। देवी ततो ग्रलेन भित्त्वा पातयामास देवीग्रलाग्रविक्षतः। पपातोर्व्या चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥ तस्मिन् प्रसन्नमिखलं हते निर्मलं जगत्स्वास्थ्यमतीवाप चाभवन्नभः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र हर्षनिर्भरमानसाः सर्वे

अवादयंस्तथैवान्ये नन्तुश्चाप्सरोगणाः । ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभृद्दिवाकरः ॥ ३ १॥ जज्वलुश्चाग्नयःशान्ताःशान्ता दिग्जनितस्वनाः॥ॐ॥ ३ २॥

> इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः॥१०॥

उवाच ४, अर्घश्लोकः १, श्लोकाः २७, एवम् ३२, एवमादितः ५७५॥



एकादशोऽच्यायः

ध्यानस्

ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्। स्मेरमुखीं वरदाङ्करापाशाभीतिकरां प्रभजे भ्रुवनेशीम्॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा विक्वपुरोगमास्ताम् । कात्यायनीं तुष्टुबुरिष्टलाभाद्

विकाशिवक्त्राञ्जंविकाशिताशाः ॥ २ ॥

१. पा॰—कम्भा । २. पा॰—बन्नास्त बि॰ ।

अ० ११ **१**ड १७७

प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद देवि प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥३॥ आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि। अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-दाप्यायते कृत्स्नमलङ्ग्यवीर्ये ॥ ४ ॥ वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या त्वं विश्वस्य बीजं परमासि माया। सम्मोहितं देवि समस्तमेतत CC-0 तर्रें Sanski Acad सम्बद्धाः । ५ ॥ ३ स० ११ एष्ठ

सकला स्वर्गमंक्तिप्रदायिनी का जनस्य कलाकाष्ठादिरूपेण विश्वस्योपरतौ

१. पा०-भुक्ति । २. पा०-माङ्गल्ये ।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १०॥ सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातांने गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु **हंसयुक्तविमानस्थे** ब्रह्माणीरूपधारिणि कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१३॥ **त्रिशूलचन्द्राहिधरे** महावृषभवाहिनि माहेश्वरीस्वरूपेण नमोऽस्तु ते॥१४॥ महाशक्तिधरेऽनघे। मयूरकुक्कुटवृते कौमारीरूपसंस्थाने नमोऽस्तु ते ॥१५॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

राक्वचकगदाशार्ङ्गग्रहीतपरमायुधे नमोऽस्तु नारायाण वैष्णवीरूपे दंष्ट्रोद्दतवसुन्धरे **गृहीतोग्रमहाचके** नमोऽस्तु शिवे हन्तुं दैत्यान कृतोद्यमे **रिसंहरूपेणोग्रेण** नमोऽस्त त्रेलोक्यत्राणसहिते नारायणि सहस्रनयनोज्ज्वले महावज्रे नमोऽस्तु चेन्द्रि हतदेत्यमहाबले शिवदूतीस्वरूपेण नमोऽस्तु ते॥२०॥ घोररूपे महारावे **शिरोमालाविभूषणे** रंष्ट्राकरालवदने

अ**०** ११

पृष्ठ १८१ चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते॥२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टिस्वधे महांऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २३॥ सर्वेश सर्वशक्तिसमन्विते। सर्वस्वरूपे भयेभ्यस्राहि नो देवि हुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५॥

१. पा०-पुष्टै । २. पा०-रात्रे । ३. पा०-महामाये । ४. शान्तनवी टीकाकारने यहाँ एक च्लोक अधिक पाठ माना है, जो इस प्रकार है—

'सर्वतःपाणिपादान्ते सर्वतोऽक्षिशिरोमुखे ।

CC-0. JK Sanskrif Academy, Jammm. Digitized by ST Foundation USA

48 88 84

ज्वालाक्रालमत्युग्रमशेषासुरसुदनम् त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि खनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ २७॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते शुभाय खड्गो भवत चण्डिक त्वां नता वयम् ॥ २८॥ रोगानशेषानपहंसि सकलानभीष्टान्। विपन्नराणां त्वामाश्रितानां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २९॥

१. पा०-ददासि कामान्।

अ० ११ **एड** १८३ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्। रूपैरनेकेर्बहुधाऽऽत्ममृतिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥३०॥ विवेकदीपे-शास्त्रेषु विद्यासु ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या। ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि तथाब्धिमध्ये दावानलो यत्र CC-0. JK Sanskrit तन्नास्थिता वृद्धांप्रारिपासि निष्त्रम् ॥ ३२॥ थ० ११ **प्रह** १८४

विश्वेश्वरि त्वं विश्वात्मका धारयसीति विश्वम्। भवन्ति विश्वेशवन्द्याः भवती विश्वाश्रया ये त्वाये मक्तिनम्राः ॥ ३३॥ देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-नित्यं यथासुरवधादधुनैवं सद्यः। पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४॥ प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिनामंडिये लोकानां वरदा भव ॥ ३५॥

१. पा०-च शमं।

देव्युवाच ॥३६॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतासुपकारकम्॥३७॥ देवा ऊच्चः॥३८॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि । एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वेरिविनाशनम् ॥३९॥ देव्युवाच ॥ ४ • ॥

वैवस्तरेन्तरे प्राप्ते अष्टाविद्यातिमे युगे। शुम्मो निशुम्भश्चेवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ॥४९॥ नन्दगोपग्रेहं जाता यशोदागर्भसम्भवा। ततस्तो नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी॥४२॥

१. पा०-कुले।

थ० ११ एष

पृथिवीतले। पुनरप्यतिरोद्रेण दानवान् ॥ ४३॥ अवतीर्य हानिष्यामि वैप्रचित्ता तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्। भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४॥ रक्ता दन्ता ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः। स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५॥ शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि मुनिभिः संस्तुता भूमो सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥ ४६॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्म्नीन्। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७॥ लोकमात्मदेहसमुद्रवैः। ततोऽहमखिलं

अ० ११ **ए**ड १८७

प्राणधारकैः ॥ ४८॥ शाकैरावृष्टेः रीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि महासुरम् ॥४९॥ हुर्गमार्ख्यं वधिष्यामि विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति हिमाचले ॥ ५०॥ भीमं रूपं कृत्वा यदा म्रनीनां त्राणकारणात् मंक्षयिष्यामि स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः सर्वे भविष्यति तन्मे नाम विख्यातं करिष्यति 119711 यदारुणाख्यस्रेलोक्ये महाबाधां कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम् । रूपं वधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥ हितार्थाय

> १. पा॰—क्षययिष्यामि (क्षपिष्यामि इति वा)। CC-0. JK Sanskrit Academy, Janammu. Digitized by S3 Foundation USA

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः। इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥५४॥ तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ ॐ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः

स्तुतिर्नामैकाद्शोऽध्यायः ॥ ११ ॥

उवाच ४, अर्घक्षोकः १, श्लोकाः ५०, एवम् ५५, एवमादितः ६३०॥



द्वाद्शोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रमां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसदस्ताभिरासेविताम्। हस्तेश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं ग्रुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

'ॐ'देव्युवाच ॥ १ ॥

एभिः स्तेवश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याहं सकलां बाधां नाशियिष्याम्यसंशयम्॥ २॥

१. पा०--शम०।

स० १२ एष्ठ

महिषासुरघातनम्। मध्केटभनाशं कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः॥३॥ चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः। श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः। भविष्यति न दारिद्वयं न चैवेष्टवियोजनम्॥ तस्य दस्युतो वा न राजतः शस्त्रानलतोयोघात्कदाचित्सम्भविष्यति तस्मान्ममेतन्माहात्म्यं पिठतव्यं श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ ७॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्

अ० १२ एष्ड १९१

त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं सम्यङानित्यमायतने सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ पूजायामग्रिकार्ये महोत्सवे ममैतचरितमुचार्यं श्राव्यमेव बलिपूजां प्रेतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या विह्नहोमं कियते महापूजा ममेत-माहात्म्यं धनधान्यसुतान्वितः

१. पा० - प्रतीक्षिष्यामि । २. पा० - सर्वेवाधा ।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अ० १२ **ए**ष्ठ **१**९२

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः। निर्भयः पुमान् ॥ १४॥ युद्धेषु जायते कल्याणं चोपपद्यते। यान्ति संक्षयं नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥ १५॥ सर्वत्र शान्तिकर्मणि तथा दुःस्वप्रदर्शने। ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम् ॥ १६॥ यान्ति ग्रहपीडाश्च उपसर्गाः शमं च नृभिर्दृष्टं मुखप्नमुपजायते ॥ १७॥ बालग्रहाभिभृतानां बालानां शान्तिकारकम्। संघातभेदे च मेत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥ नुणां बलहानिकरं दुर्वतानामशेषाणां

नाश्नम् ॥ १९॥ रक्षोभूतिपशाचानां ममैतन्माहात्म्यं सित्रिधिकारकम्। पशुपुष्पाद्यधूपेश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥ **भोजनेहों** में: प्रोक्षणीयेरहर्निशम्। विप्राणां प्रदानेर्वत्सरेण विविधेर्मोगैः अन्येश्व क्रियते सास्मिन् सकृत्युचरिते प्रयच्छति ॥ २२॥ पापानि तथाऽऽरोग्यं भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं दुष्टदेत्यनिवर्हणम् ॥ २३॥ यनमे भयं पुंसां भेः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मिषिभः कृताः ॥ २४॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्। दावाग्निपरिवारितः ॥ २५॥ वापि प्रान्तरे गृहीतो वापि वृतः ग्रून्ये वनहस्तिभिः॥ २६॥ वने वा सिंहव्याघातुयातो वा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि पोते महार्णवे ॥ २७॥ वा वातेन स्थितः संग्रामे भृशदारण शस्रेषु वेदनाभ्यदितोऽपि घोरासु मुच्येत सङ्घटात्। नरो म्मरन्ममेत चरितं वैरिणस्तथा प्रभावात्सिहाचा पलायन्ते

चिण्डका चण्डविकमा ॥३२॥ भगवती तत्रेवान्तरधीयत देवानां तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा सर्वे चक्रविनिहतारयः। यज्ञभागभुजः निहते महावीर्ये सा सेव विश्वं पा॰-तां सर्बदेवा॰।

१२ एड

सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋदिं प्रयच्छति ॥३७॥ महाकालं महामारी मेव करोति भूतानां ददाति वित्तं प्रत्रांश्च मितं धर्मे गितं शुभाम् ॥ॐ॥४१॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहाम्ये फलस्तुतिनीम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ उवाच ३, अर्घश्चोको २, श्चोकाः ३७, एवम् ४१, एवमादितः ६७१॥

१. पा०-तथा।

श्रयोदशोऽध्यायः

~~

ध्यानम्

ॐबालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् । पाशाङ्कशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।
एवंप्रभावा सा देवी यथेदं धार्यते जगत्॥२॥
विद्या तथैव कियते भगवद्विष्णुमायया।
तथा त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः॥३॥

थ० १३ एड १९८ मोह्यन्ते मोहिताश्चेव मोहमेष्यन्ति चापरे। तामुपेहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्॥४॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥

स नराधिपः॥ सुरथः तमृषि शंसितव्रतम्। महाभागं राज्यापहरणेन निर्विण्णोऽतिममत्वेन महामुने। सद्यस्तपसे नदीपुलिनसंस्थितः॥ संदर्शनार्थमम्बाया वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं तो तस्मिन पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्ति महीमयीम् ॥१०॥

अर्हणां चक्रतस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणेः।
निराहारो यताहारो तन्मनस्को समाहितो॥११॥
ददतुस्तो बलिं चैव निजगात्रासृग्धक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्निभिवंषेर्यतात्मनोः॥१२॥
पिरतुष्टा जगदात्री प्रत्यक्षं प्राह चिष्डका॥१३॥
देव्युवाच॥१४॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ १५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥ १६॥

ततो वब्रे नृपो राज्यमविश्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशृत्रुबलं बलात् ॥१७॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वन्ने निर्विण्णमानसः। ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम्॥१८॥ देव्युवाच॥१९॥

प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ स्वं राज्यं भविष्यति तत्र तव जन्म मनुभवान य श्र वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ २४॥ संसिद्ये ज्ञानं भविष्यति तव मार्कण्डेय 11 38 11 उवाच

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलिषतं वरम् ॥२७॥

-१. पा०-मनुनीम ।

वभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामिमष्टुता।
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षित्रयर्षभः॥२८॥
सूर्याज्जनम समासाद्य सार्वाणर्भविता मनुः॥२९॥
एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षित्रयर्षभः।
सूर्याज्जनम समासाद्य सार्वाणर्भविता मनुः॥क्षीं ॐ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये सुरथ-वैदययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

उवाच ६, अर्द्धश्लोकाः ११, श्लोकाः १२, एवम् २६, एवमादितः

७ • • ॥ समस्ता उवाचमन्त्राः ५७, अर्द्धश्लोकाः ४२,

श्लोकाः ५३५, अवदानानि ६६॥

उपसंहारः

इस प्रकार सप्तशतीका पाठ पूरा होनेपर पहले नवार्ण जप करके फिर देवीसूक्तके पाठका विधान है, अतः यहाँ भी नवार्ण-विधि उद्धृत की जाती है। सब कार्य पहलेकी ही भाँति होंगे।

विनियोगः

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभञ्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वन्यो देवताः, ऐ बीजम्, हीं शक्तिः, क्षीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियंगः।

ऋष्यादिन्यासः

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायन्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, ग्रुखे । महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि । ऐं बीजाय नमः, गुह्ये । हीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ ।

'ॐ ऐं हीं क्लीं चाम्रुण्डाये विच्चे' इति मूलेन करी संशोध्य-

करन्यासः

ॐ ऐं अङ्गुष्टाभ्यां नमः । ॐ हीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ हीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चाम्रुण्डाये अनामिकाभ्यां नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ऐं हीं हीं चाम्रुण्डाये विच्चे करतल करपृष्टाभ्यां नमः ।

हृद्यादिन्यासः

ॐ ऐं हृद्याय नमः । ॐ हीं शिरसे खाहा । ॐ क्रीं शिखायै वषट् । ॐ चाम्रुण्डाये कवचाय हुम् । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वीषट् । ॐ ऐं हीं क्रीं चाम्रुण्डाये विच्चे अस्राय फट् ।

अक्षरन्यासः

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ही नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्वीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मुं नमः, वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यें नमः, वामनासापुटे । ॐ विं नमः, मुखे । ॐ च्चें नमः, गुह्ये । 'एवं विन्यस्याष्ट्यारं मुलेन व्यापकं कुर्यात'

दिङ्न्यासः

ॐ ऐं प्राच्ये नमः । ॐ ऐं आग्नेय्ये नमः । ॐ हीं दक्षिणाये नमः । ॐ हीं वि कै नैर्ऋत्ये नमः । ॐ क्कीं प्रतीच्ये नमः । ॐ क्कीं वायच्ये नमः । ॐ चामुण्डाये उदीच्यें नमः । ॐ ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं हीं क्ली चामुण्डायै विच्चे ऊर्घायै नमः। ॐ ऐं हीं क्ली चामुण्डायै विच्चे अप्ये नमः।

ध्यानम्

चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छलं धुशुण्डीं शिरः शक्कं संद्रवतीं करेखिनयनां सर्वाङ्गभृषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तीत्स्विपते हरी कमलजो इन्तुं मधुं केटभम्।।१॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकृतिशं पद्मं धनुः क्रण्डिकां दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाश्च सुदर्शने च दथतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह यहालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।' २ ।। घण्टाशूलहलानि शह्वग्रुसले चक्रं धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधती धनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् । गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां पूर्वीमत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्मादिदैत्यादिनीम् ॥ ३ ॥

इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचारसे देवीकी पूजा करे। फिर १०८ वार श्वाणीमन्त्रका जप करना चाहिये। जप आरम्भ करनेके पहले 'ऐं हीं

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

1

अक्षमालिकायै नमः' इस मन्त्रसे मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे--

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिण। चतुर्वर्गस्त्विय न्यल्लस्मान्मे सिद्धिदा मव।। ॐ अविष्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्धचर्थ प्रसीद मम सिद्ध्ये।।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धि देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धि परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करे। जप पूरा करके उसे मगवतीको समर्पित करते हुए कहे—

गुद्यातिगुद्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिमेवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥ तत्पश्चात् फिर नीचे लिखे अनुसार न्यास करे—

करन्यासः

ॐ हीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः । ॐ यें कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हीं चण्डिकाये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हद्यादिन्यासः

चक्रिणी तथा। गदिनी खिङ्गिनी ग्रलिनी घोरा बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ हृदयाय नमः । शङ्खिनी चापिनी चास्विके। खडगेन पाहि नो देवि पाहि च ॥ शिरसे स्वाहा । चापज्यानि:स्वनेन पाहि घण्टास्वनेन नः दक्षिणे। चण्डिके रक्ष प्रतीच्यां च प्राच्यां स्थ तथेश्वरि ॥ शिखायै वषट् । उत्तरस्यां भ्रामणेनात्मग्रलस्य विचरन्ति त्रैलोक्ये सौम्यानि रूपाणि यानि भुवम् ॥ कवचाय रक्षासांस्तथा चात्यथंघोराणि यानि तेऽम्बिके। चास्राणि खड्गशूलगदादीनि यानि सर्वतः ॥नेत्रत्रयाय वीषट्। तैरसान् रक्ष करपल्लवसङ्गीनि सर्वशक्तिसमन्विते । सर्वेशे सर्वस्वरूपे ते ॥ असाय फट् दुर्गे देवि नमोऽस्त देवि भयेभ्यस्त्राहि नो

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितास् ।

हस्तैश्रकगदासिखेटविशिखांश्वापं गुणं तर्जनीं विश्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुगाँ त्रिनेत्रां भजे॥ ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्

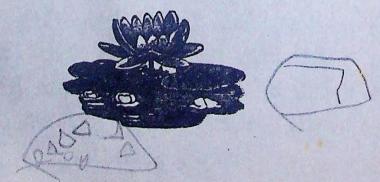
ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सक्तस्य वागाम्भूणी ऋषिः, सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो जगती, श्विष्टानां त्रिष्टुष् छन्दः, देवी-माहात्म्यपाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्येश्वतुर्भिर्भुजेः राक्षं चक्रधनुः शरांश्च दधती नेत्रेस्त्रिभिः शोभिता। आमुक्ताङ्गदहारकङ्गणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥ ॐअहं स्द्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैस्त विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोमा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमिथनोमा।१।

अहं सोममाहनसं विभम्यंहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्। अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते २ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यद्धः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ३ मया सो अन्नमित्त यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ४ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः। यंकामये तं तसुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तसृषिं तं सुमेधाम् ५ अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ। अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश।। ६।।

अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्खन्तः समुद्रे। ततो वि तिष्ठे सुवनातु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि। ७। अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा सुवनानि विश्वा। परो दिवापर एना पृथिव्येतावती महिना संबसूव। ८॥



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुरु

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

देव्ये महादेव्ये शिवाये प्रकृत्ये भद्राये नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ नमो नित्याये गोंयें धात्र्ये नमो चेन्द्ररूपिण्ये सुखाये सततं कल्याण्ये प्रणतां वृद्ध्ये सिद्ध्ये कुर्मो नमो नमः। भूभृतां लक्ष्मये शर्वाण्ये ते नमो नमः तथेव कृष्णाये अतिसोम्यातिरोद्राये नमो नतास्तस्यं जगत्प्रतिष्ठाये देव्ये

सर्वभूतेषु विष्णुमायेति श्बिदता। देवी नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः॥६॥ सर्वभृतेषु चेतनेत्यभिधीयते। देवी या नमसस्ये नमसस्ये नमो नमः ॥ ७॥ नमसस्ये या देवी सर्वभृतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्य नमस्तस्य नमस्तस्य नमा नमः॥८॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः॥९॥ या देवी सर्वभृतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः॥१०॥ देवी सर्वभृतेषु छायारूपेण संस्थिता।

शक्तिरूपेण सवेभृतेषु EF नमः ॥१२॥ २१२ नमस्तस्ये सर्वभूतेषु नमो क्षान्तिरूपेण नमो नमस्तस्य जातिरूपेण नमः नसो लज्जारूपेण सवभूतेषु न्मः ॥ १६॥ नमस्तस्यै नमो

518

देवी सर्वभृतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। वु॰ विश्व प्रष्ठ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमा नमः ॥ १७॥ नमसस्यै देवी सर्वभृतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। या नमसस्यै नमस्तस्य नमस्तस्ये नमो नमः ॥१८॥ सर्वभृतेषु कान्तिरूपेण या देवी संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमसस्ये नमो नमः॥ १९॥ देवी सर्वभृतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। या नमसस्ये नमसस्ये नमस्तस्ये नमो नमः ॥ २०॥ देवी सर्वभृतेषु वृत्तिरूपेण या संस्थिता। नमस्तस्य नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २१॥ देवी ट्रसर्वभुद्धेषु cademy, समातिक्योण 83 Fourille ता।

तु॰ पृष्ठ २१४

नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२॥ दयारूपेण नमो नमः ॥ २३॥ नमस्तस्यै तुष्टिरूपेण सर्वभूतेषु नमस्तस्यै नमस्तस्ये नमा नमः ॥ २४॥ मात्रूपेण सर्वभूतेषु नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः॥ २५॥ सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नमः ॥ २६॥ भूतानां चाखिलेषु इन्द्रियाणामधिष्ठात्री तस्ये व्याप्तिदेव्ये नमो नमः ॥ २७॥ वु॰ धृष्ठ २१५

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्वयाप्य स्थिता जगत्। नमसस्ये नमस्तस्ये नमो नमः॥२८॥ नमस्तस्यै सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-स्तुता स्ररेन्द्रेण दिनेषु सेविता। ग्रमहेतुरीश्वरी नः सा शुमानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ २९॥ चोद्धतदैत्यतापिते-या रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते। तत्क्षणमेव हन्ति भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥३०॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अय प्राधानिकं रहस्यम्

ॐअस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरजुष्डुप्छन्दः, महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्रत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्नवतारा में चिण्डकायास्त्वयोदिताः। एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमहिसि॥१॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज। विधिना बृहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे॥२॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते। भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप॥३॥

सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी। लक्ष्यालक्ष्यस्कपा सा व्याप्य कृत्सनं व्यवस्थिता॥ ४॥ गदां खेटं पानपात्रं च नागं लिङ्गं च योनिं च विश्रती चप मूर्डनि तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा तदिखलं स्वेन पूरयामास तेजसा तदिखलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी। स्बपं केवलेन हि॥ तमसा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

पुरु पुरु ११८

कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥ ९ प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा। नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः॥१०॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्। तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ॥ ११॥ महामाया महाकाली महामारी कालरात्रिद्दरत्यया ॥ १२॥ चेकवीरा तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः। एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्वते सुखम्॥ १३॥ महालक्ष्मीः स्वरूपमप्रं **सत्त्वा**क्येनातिशुद्धेन

चु॰ प्रा॰ **एड** २१**९**

वीणापुस्तकधारिणी अक्षमालाङ्कुश्धरा सा बभूव वरा नारी नामान्यस्ये च सा ददो ॥ १५॥ सरस्वती महावाणी भारती महाविद्या वाक आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्। युवां जनयतां देव्यो मिथुने स्वानुरूपतः॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्। हिरण्यगर्भी रुचिरो स्त्रीपुंसो कमलासनो ॥ १८॥ ब्रह्मन् विधे विरिश्चेति धातरित्याह तं नरम्। श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥ १९॥ महाकाली प्रारती च मिथुने सुजतः प्रसह।

वु॰ श्रा॰ एड २२०

नामानि च वदामि ते॥ २०॥ श्वेताङ्गं रक्तबाई महाकाली सितां स्त्रियम् ॥ २१॥ स्थाणुः कपर्दी च कामधेतुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥ २२॥ गौरीं स्रियं कृष्णं च नामानि तयोरपि वदामि विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनादनः। उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा पुरुषत्वं सद्यः पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो

डु॰ प्रा॰ १८१ २२१

महालक्ष्मीर्चप त्रयोम्। पत्नीं प्रदरो ब्रह्मणे श्रियम् ॥ २६॥ गोरीं वासुदेवाय च वरदां सद्राय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्। संभ्य सह भगवान सद्रस्तद् गोर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥ कार्यजातमभून्रप प्रधानादि अण्डमध्ये सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥ २८॥ महाभूतात्मकं केशवः पालयामास सह तल्लक्ष्यया गोर्या महेश्वरः ॥ २९॥ जगत्सवं सह सजहार सर्वसत्त्वमयीश्वरी। महालक्ष्मीमंहाराज सेव नानामिधानभृत् ॥३०॥ साकारा नामान्तरैर्निरूप्येषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ॐ॥ ३१॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammnu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ वैकृतिकं रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐत्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता। मद्रा भगवतीर्यते हुगां चण्डिका तमोगुणा। महाकाली हरेरुका यां मधुकेटभनाशार्थं तुष्टावाम्बु जासनः दशपादाञ्जनप्रभा दश्भुजा दशवक्त्रा राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥ विशालया भीमरूपापि स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा रूपसोभाग्यकान्तीनां सा महाश्रियः

दुव पृष्ठ २२३

खड्गबाणगदाञ्चलचकराङ्मभुशुण्डिभृत् परिघं कार्मुक शीर्षं निश्च्योतह्रधिरं दधौ ॥ ५ ॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया। आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥ ६ ॥ सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भृतामितप्रभा। त्रिगुणा सा महालक्ष्माः साक्षानमहिषमर्दिनी ॥ ७॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला। रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥८॥ मुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा। चित्रानुलेपना कान्तिरूपसोभाग्यशालिनी ॥ ९॥ अष्टादश्धुजा पूज्या सहस्रभुजा सती।

इ॰ वे॰ प्रह

वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरकमात्॥ १०॥ कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा। च पाशकः ॥ ११॥ परग्रः शङ्को घण्टा शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥ महालक्ष्मीमिमां सर्वदेवमयीमीशां प्रभ्रमंचेत् पूजयेत्सर्वलोकानां स सत्त्वेकगुणाश्रया गौरीदेहात्समुद्भता या शुस्भासुरनिबर्हिणी प्रोक्ता **माक्षात्मरस्वती** बाणमुसले ग्रलचक्रभृत्। कार्म्कं वसुधाधिप लाङ्गल

हु० वै॰ एष्ट

प्रयच्छति। सम्पूजिता सर्वज्ञत्वं भक्त्या शुम्भास्रित्विहिणी ॥ १६॥ देवी निशुम्भमाथिनी पूर्तीनां तव पाथिव स्वरूपाणि इत्युक्तानि निशामय ॥ १७॥ वृथगासां उपासनं जगन्मातुः महाकाली सरस्तती। महालक्ष्मीर्यदा पूज्या पूज्ये मिथुनत्रयम् ॥ १८॥ दक्षिणोत्तरयोः **पृष्ठतो** सद्रो गौर्या च दक्षिणे। मध्ये स्वर्या पुरतो देवतात्रयम् ॥ १९॥ ह्याकेशः लक्ष्मया मध्ये वामे चास्या अष्टादश्रुजा दशानना समर्चयेत् ॥२०॥ लक्ष्मीर्महतीति दक्षिणेऽष्टभुजा चेषा अष्टादश्भुजा यदा

यु० वै० पृष्ठ

दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१॥ दशानना सर्वारिष्टप्रशान्तये। सम्पूज्यौ शुम्भासुरिनबर्हिणी ॥ २२॥ पूज्या शक्तयः पूज्यास्तदा सद्रविनायको। समर्चयेत ॥ २३॥ इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः अवतारत्रयाचीयां महिषमदिनी ॥ २४॥ चेषा पूज्या अष्टादश्रमुजा सेव **महालक्ष्मीर्महाकाली** सर्वलोकमहेश्वरी ॥ २५॥ पुण्यपापानां महिषान्तकरी भक्तवत्सलाम् ॥ २६॥ चण्डिकां पूजयेज्ञगतां ।

तु० वे० पृष्ठ २२७

अर्घादिभिरलंकारेर्गन्धपुष्पेस्तथाक्षतेः नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितः ॥ २७॥ ध्रपेदीपेश्च मांसेन रुधिराक्तेन बालिना स्या (बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयोरिता॥ तेषां किल सुरामांसैनोंक्ता पूजा नृप कचित।) प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥ २८॥ ताम्बुलैर्भक्तिभावसमन्वितः। सकपूरिश्च वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ २९॥ पुजयेनमहिषं सायुज्यमीश्या। प्राप्तं धर्ममीश्वरम् ॥ ३०॥ सिंहं दक्षिणे समग्रं पुरतः

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

तु० वै० पृष्ठ २२८

धीमांस्तस्या स्तवनं स्तुवीत कृताञ्जलिभूत्वा नैकेनेतरयोरिह ॥३२॥ मध्यमेन एकेन जपेजपञ्छद्रमवाप्नुयात्। चरितार्धं कृताञ्जलिः ॥ ३३॥ मुधि प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा क्षमापयेज्जगदात्रीं प्रतिश्लोकं जुहुयात्पायसं चिएडकायें ज्रह्यात्स्तोत्रमन्त्रेर्वा श्रमं नामपदेंदेंवीं पूजयत्स्रसमाहितः भूयो प्रहः प्रणम्यारोप्य भावयेदीशां

दु० वै० १प्रष्ठ २२९

एवं यः पूजयेद्धक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम् । भुक्ता मोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥ ३७॥ यो न पूजयते नित्यं चिण्डकां भक्तवत्सलाम्। भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी ॥ ३८॥ तस्मात्पृजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्। यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यास ॥३९॥ इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्



CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥ १ सा सुकान्तिकनकाम्बरा कनकोत्तमकान्तिः कनकोत्तमभूषणा॥ कनकवर्णाभा कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री स्क्माम्बुजासना देवी प्रोक्ता या रक्तदन्तिका नाम शृणु सर्वभयापहम् तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि

रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तवणां रक्ताम्बरा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥ ५॥ रक्तायुधा रक्तदशना रक्तदन्तिका। रक्ततीक्ष्णनखा पति नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेजनम् ॥६॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीवों लम्बावतिस्थूलो तावतीव मनोहरो ॥ ७ ॥ कर्कशावतिकान्तो तो सर्वानन्दपयोनिधी। भक्तान सम्पाययेदेवी सर्वकामदुघो स्तनो ॥ ८॥ खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च विभार्ति सा। आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च॥९॥

दु॰ मू॰ एष्ठ २३२

इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥ १०॥ (भुक्तवा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्) अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्। सा परिचरेद्देवी पातं प्रियामिवाङ्गना ॥ ११॥ नीलवर्णा नीलोत्पलिवलोचना। शाकम्भरी गम्भीरनाभिस्रिवलीविभूषिततनृद्री 119211 मुकर्कश्रममोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया शाकसञ्चयम्। पुष्पप्रव्रवमूलादिफलाढ्यं क्षुत्रण्यत्युभयापहम् ॥१४॥ काम्यानन्तरसेर्युक्तं

परमेश्वरी। कार्मकं बिभ्रती स्फुरत्कान्ति श्वताक्षी सा सेव हुगी प्रकीतिता ॥ १५॥ गाकम्भरी शमनी विशोका द्रितापदाम्। दुष्टदमनी सा च पार्वती ॥ १६॥ उमा गौरी सती चण्डी कालिका शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्। शीघमन्नपानामृतं अक्षय्यमश्नुते फलम् ॥ १७॥ नीलवर्णा दंष्ट्रादश्नभासुरा वृत्तपीनपयोधरा ॥ १८॥ विशाललोचना नारी च विभ्रती शिरः सैवोक्ता कालरात्रिः 119911 तेजोमण्डलदुर्धर्षा

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

चित्राभरणभूषिता ॥२०॥ चित्रानुलेपना देवी महामारीति गीयते। चित्रभ्रमरपाणिः सा इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप ॥ २१॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः। इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥ २२॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्। तस्मात् सर्वप्रयतेन देवीं जप निरन्तरम् ॥ २३॥ सप्तजन्मार्जितै चींरैर्ब्रह्महत्यासमेरिप पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्विकिल्बिषेः ॥ २४॥ देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्। सवेकामफलप्रदम् ॥ २५॥

हु॰ क्ष॰ **एड २३**५ (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि। सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्। अतोऽहं विश्वरूपं तां नमामि परमेश्वरीम्॥)

क्षमा-प्रार्थना

अपराधमहस्राणि कियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयिमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्विरि॥१॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्विरि॥२॥ मन्त्रहीनं कियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्विरि। यत्पृजितं ००० मयाह्म देवि क्ष्याहीपूर्णं ५३ हतदस्तु मे॥३॥ बु॰ श्रुष्ठ २३६

अपराधशतं यां गतिं समवाप्रोति न तां ब्रह्मादयः जगदम्बिके। शरणं प्राप्तस्त्वां सापराधोऽस्मि यथेच्छिस इदानीमनुकम्प्योऽहं अज्ञानाद्विस्मृतेर्भान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। क्षम्यतां देवि प्रसीद सचिदानन्दिवग्रहे। जगन्मातः परमेश्वरि॥ ७॥ गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद गुह्यातिग्रह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। त्वतप्रसादात्सुरेश्वरि ॥ ८॥ देवि सिद्धिमंबतु

॥ श्रीदुर्गार्पणमस्तु ॥

श्रीदुर्गामानस-पूजा उद्यच्चन्दनकुङ्कमारुणपयोधाराभिराष्ठावितां नानानर्घमणिप्रवालघटितां दत्तां गृहाणाम्बिके। आमृष्टां सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ताम्बुजैर्भक्तितो मातः सुन्दरि भक्तकल्पलतिके श्रीपादुकामादरात् ॥ १॥ देवेन्द्रादिभिर्चितं सुरगणेरादाय सिंहासनं चन्नत्कान्ननसंचयाभिरचितं चारुप्रभाभास्वरम्। एतचम्पककेतकीपरिमलं तैलं महानिर्मलं गन्धोद्वर्तनमादरेण तरुणीदत्तं गृहाणाम्बिके ॥ २ ॥ पश्चाद्देवि ग्रहाण शम्भ्रगृहिणि श्रीसुन्दरि प्रायशो गन्धद्रव्यसमूहिनभर्तरं, रिकाश्वाचीपलं रिकिर्मलम् ।

तु० मा० एष्ठ २३७

दु॰ मा॰ एड १३८

तत्केशान् परिशोध्य कङ्कतिकया मन्दाकिनीस्रोतिस स्नात्वा प्रोज्ज्वलगन्धकं भवतु हेश्रीसुन्दरि त्वनसुदे ॥ ३॥ सुराधिपतिकामिनीकरसरोजनालीधृतां विश्राजिताम्। सचन्दनसकुङ्गमाग्रहभरेण सरसशुद्धकस्त्रिकां महापरिमलोज्ज्वलां त्रिपुरसुन्दिर श्रीप्रदे ॥ ४ ॥ गृहाण वरदायिनि गन्धर्वामरिकन्नरप्रियतमासन्तानहस्ताम्बुज-प्रस्तारेधियमाणमुत्तमतरं काश्मीरजापिञ्जरम्। मातर्भाखरभाग्रमण्डललसत्कान्तिप्रदानोज्ज्वलं चैतन्निर्मलमातनोतु वसनं श्रीसुन्दरि त्वनसुदम्॥ ५॥ वु॰ मा॰ पृष्ठ स्वर्णाकल्पितकुण्डले श्रातियुगे हस्ताम्बुजे सुद्रिका मध्ये सारसना नितम्बफलके मञ्जीरमङ्घिद्वये। हारो वक्षिम कङ्कणो कणरणत्कारो करद्वन्द्वके विन्यस्तं मुकुटं शिरस्यनुदिनं दत्तोन्मदं स्तूयताम्॥ ६॥ ग्रीवायां धृतकान्तिकान्तपटलं ग्रेवेयकं सुन्दरं सिन्द्रं विलसछलाटफलके सोन्दर्यमुद्राधरम्। राजत्कज्जलमुज्ज्वलोत्पलदलश्रीमोचने लोचने तिह्व्योषिविर्मितं रचयतु श्रीशाम्भवि श्रीप्रदे ॥ ७॥ अमन्दतरमन्दरोन्मथितदुग्धसिन्धूद्भवं निशाकरकरोपमं त्रिपुरसुन्दरि गृहाण

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

बु० मा०

रतिकराम्बुजस्थायिनम् ॥ ८॥ विंनिर्मितमघचिछदे कस्तूरीद्रवचन्दनागुरुसुधाधाराभिराष्ठावितं चञ्चचम्पकपाटलादिसुरभिद्रव्यैः सुगन्धाकृतम्। देवस्त्रीगणमस्तकस्थितमहारत्नादिकुम्भव्रजे-रम्भः शाम्भवि संभ्रमेण विमलं दत्तं ग्रहाणाम्बिके ॥ ९ ॥ कह्नारोत्पलनागकेसरसरोजाख्यावलीमालती-मल्डीकैरवकेतकादिकुसुमें रक्ताश्वमारादिभिः। पुष्पेमां ल्यभरेण वे सुरिभणा नानारसस्रोतसा ताम्राम्भोजनिवासिनीं भगवतीं श्रीचिण्डिकां पूजये॥ १०॥ मांसीग्रग्यलचन्दनाग्रहरजःकर्पूरशैलेयजै-है माध्वीकैः सह कुङ्कमेः सुरचितैः सर्पिभिरामिश्रितैः ।

तुः मा० पृष्ठ २५१ सौरभ्यस्थितिमन्दिरे मणिमये पात्रे भवेत् प्रीतये धूपोऽयं सुरकामिनीविरचितः श्रीचण्डिके त्वन्सुदे॥ ११॥ **घृतद्रवपरिस्फुरह्रचिरर** स्यष्ट्यान्वितो महातिमिरनाशनः सुरनितम्बिनीनिर्मितः। सुवर्णचषकस्थितः सघनसारवर्त्यान्वित-स्तव त्रिपुरसुन्दरि स्फुरित देवि दीपो सुदे ॥ १२॥ जातीसौरभनिर्भरं रुचिकरं शाल्योदनं निर्मलं हिङ्गमरीचजीरसुरभिद्रव्यान्वितवर्ञञ्जनैः। पकान्नेन सपायसेन मधुना दध्याज्यसंमिश्रितं नैवेद्यं सुरकामिनीविरिचतं श्रीचिण्डिके ब्लब्सुदे ॥ १३॥ ई बु॰ माध्य १४२

बहुलनागवल्लीदलं लवङ्गकालकोज्जवलं सजातिफलकोमलं सघनसारपूरीफलम्। र्हाचररत्नपात्रस्थितं सुधामधुरिमाकुलं मुखपङ्कजे स्फ्रिरितमम्ब ताम्बूलकम् शरतप्रभवचन्द्रमःस्फुरितचन्द्रिकासुन्दरं गलत्मुरतरङ्गिणीललितमौक्तिकाडम्बरम् गृहाण नवकाञ्चनप्रभवदण्डखण्डोज्ज्वलं महात्रिपुरसुन्दरि प्रकटमातपत्रं महत् ॥१५॥ मातस्त्वनमुदमातनोतु सुभगस्रीभिः सदाऽऽन्दोलितं गुभं चामरामिन्दुकुन्दसदृशं प्रस्वेददुःखापहम्। सद्योऽगस्त्यवसिष्ठनारदशुकव्यासादिवाल्मीकिभिः

स्वे चित्ते क्रियमाण एव कुरुतां रामाणि वेदध्वनिः ॥ १६॥ दु॰ मा॰ १८३ स्वर्गाङ्गणे वेणुमृदङ्गशङ्घभेरीनिनादैरुपगीयमाना। कोलाहलराकलिता तवास्तु विद्याधरी चत्यकला सुखाय।। देवि मक्तिरसभावितवृत्ते प्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते। तत्र लौल्यमपि सत्फलमेकं जन्मकोटिभिरपीह न लभ्यम् एतेः षोडशंभिः पद्यैरुपचारोपकल्पितेः। यः परां देवतां स्तौति स तेषां फलमाप्नुयात् ॥ १९॥ अथ दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी। दुर्गमच्छेदिनीः Acade दुर्मसाधिनी by S3 दुर्मनाशनी॥

4

हु॰ इा॰ एष्ठ २४४

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गदैत्यलोकदवानला॥ दुर्गमालोका दुर्गमविद्या दुगमज्ञानसंस्थाना दुर्गमार्थस्वरूपिणी।। दुगंमगा दुर्गमासुरसंहन्त्री हुगेमता दुर्गभामा हुर्गभा हुगांया मम नामावलिमिमां यस्तु पठेत सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न

दु॰ एड २४५

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदिप च न जाने स्तुतिमहो न चाह्नानं ध्यानं तदिप च न जाने स्तुतिकथाः। न जाने मुद्रास्ते तदिप च न जाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत । तदेतत् क्षन्तव्यं जनि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत कचिदिप कुमाता न भवति॥ २॥ कुषुत्रा जायत वग नपा जु पृथिव्यां पुत्रास्ते जनि बहवः सन्ति सरलाः परं तेषां ८०० मध्ये त्रव्यविर्द्धता कोऽहं ३ म्हणाता ॥

बु॰ वे॰ **एड** २४६

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो जायेत कचिदिप कुमाता न भवति ॥ ३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मिय निरुपमं यत्प्रकुरुष कुपुत्रो जायेत कचिदिप कुमाता न भवति॥ ४॥ देवा विविधविधसेवाकुलतया मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते त वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भिवता निरालम्बोलम्बोदरजननि कं यामि शरणम्॥ ५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा

| निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः। तवापणें कणें विद्याति मनुवणें फलमिदं जनः को जानीते जननि जननीयं जपविधो।। ६।। चिताभस्मालेपो गरलमञ्चनं दिक्पटधरो जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः। कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलामिदम् ॥ ७ ॥ न मोक्षस्याकाङ्का भवविभववाञ्छापि च न मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः। अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी सुद्राणी शिव शिव भवानीति ज्यतः॥ ८॥ है दु॰ एष्ठ २४८

विविधोपचारैः नाराधितासि विधिना रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं किञ्चन मय्यनाथे यदि त्वमेव कृपामुचितमम्ब परं तवेव॥ ९॥ स्मरणं त्वदीयं मग्नः हुगें करुणाणिवेशि। करोमि भावयेथाः नेतच्छठत्वं मम क्षुधातृषातां जननीं स्मरन्ति ॥ १० विचित्रमत्र किं जगदम्ब परिपूर्णा चेन्सिय करणास्ति

वु० वृठ पृष्ठ अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२॥

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।



सिद्धकुञ्जिकास्तात्रम्

शिव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्। येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः शुभो भवेत्॥ १॥ न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्। न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम्॥ २॥ कुञ्जिकापाठमात्रेण हुर्गापाठफलं लभेत्। अति ग्रह्मतरं देवि देवानामिप दुर्लभम् ॥ ३ ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्। पाठमात्रेण संसिद्ध्येत कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

अथ मन्त्रः

अँ ऐं ही क्लीं चामुण्डाये विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं हीं क्षीं चामुण्डायें विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् खाहा।। इतिमन्त्रः ॥ नमस्ते रुद्ररूषिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ॥ नमः कैटमहारिण्यै नमस्ते महि-षार्दिनि ॥ १ ॥ नमस्ते शुस्भइन्त्र्ये च निशुस्भासुरघातिनि ॥ २ ॥ जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्य मे ।। ऐंकारी सृष्टिक्षपायै हींकारी प्रतिपालिका ।। ३ ।। इहींकारी काम-रूपिण्ये बीजरूपे नमोऽस्तु ते ॥ चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी ॥ ४॥ विच्चे चामयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ५ ॥ धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी। क्रां कीं कूं कालिका देवि शां शीं शूं में शुभं कुरु।। ६ ।। हुं हुं हुंकार-रूपिण्ये जं जं जम्भनोदिनी ।। आं श्री अं भैरवी मद्रे भवान्ये ते नमो नमः ।। ७ ।। अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं खं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ।। पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खुं खेचरी तथा ।।८।। सां सीं सं सप्तशती देव्या मन्त्रसिद्धि कुरुष्व मे ।। इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्रजागितहेतवे ।। अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ।। यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् ।। न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥

इति श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे

कुञ्जिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

सप्तरातीके कुछ सिद्ध सम्पुर-मन्त्र

श्रीमार्कण्डेयपुराणान्तर्गत देवीमाहात्म्यमें 'स्लोक' 'अर्घ इलोक' और 'उवाच' आदि मिलाकर ७०० मन्त्र हैं । यह माहात्म्य दुर्गासप्तरातीके नामसे प्रसिद्ध है । सप्तराती अर्घ, धर्म, काम, मोक्ष—चारों पुरुषार्थोंको प्रदान करनेवाली है । जो पुरुष जिस भाव और जिस कामनासे श्रद्धा एवं विधिके साथ सप्तरातीका पारायण करता है, उसे उसी भावना और कामनाके अनुसार निश्चय ही फल-सिद्धि होती है । इस बातका अनुभव अगणित पुरुषोंको प्रत्यक्ष हो चुका है । यहाँ हम कुछ ऐसे चुने हुए मन्त्रोंका उल्लेख करते हैं, जिनका सम्पुट देकर विधिवत् पारायण करनेसे विभिन्न पुरुषार्थोंकी व्यक्तिगत और साम्हिकरूपसे सिद्धि होती है । इनमें अधिकांश सप्तरातीके ही मन्त्र हैं और कुछ बाहरके भी हैं—

(१) सामृहिक कल्याणके लिये

देव्या यया ततिमदं जगदात्मशक्त्या निक्शेषदेवगणशक्तिसमृहसृत्यी।

तामिनकामित्रलदेवमहर्षिपूज्यां मक्स्या नताः सा विद्यातु शुमानि सा नः ॥ (२) विश्वके अशुभ तथा भयका विनादा करनेके लिये

यह्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो

ब्रह्मा हरश्र न हि वक्तुमलं बलं च।

सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय

नाञ्चाय चाजुमभयस्य मतिं करोतु॥

(३) विश्वकी रक्षाके लिये

या श्रीः खयं सुकृतिनां भवनेष्त्रलक्ष्मीः पापात्मनां कृतिधयां हृदयेषु बुद्धिः। श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लजा तां त्वां नताः सा परिपालय देवि विश्वस्।।

(४) विश्वके अम्युदयके लिये

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वारिमका धारयसीति विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति CC-0. JK Sans विश्वास्त्रस्म, Jammसेu. Digi त्वस्य स्रि S3 Foun स्रक्तिन्द्रशः ।। (९) भयनाशके लिये

(क) सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

(ख) एतत्ते वंदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते।।

(ग) ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसद्दनम् त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।

(१०) पापनाशके लिये

हिनस्ति दैत्यतेजांसि खनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेम्योऽनः सुतानिव॥

(११) रोग-नाशके लिये

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ग्राश्रयतां प्रयान्ति।।

(१२) महामारी-नाशके लिये काली भद्रकाली कपालिनी। जयन्ती मङ्गला दुर्गा क्षमा शिवा घात्री खाहा खधा नमोऽस्तु ते।। (१३) आरोग्य और सौभाग्यकी प्राप्तिके लिये सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विपो जहि ॥ (१४) सुलक्षणा पत्नीकी प्राप्तिके लिये मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् । पनीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्धवाम् ॥ तारिणीं (१५) बाधा-शान्तिके लिये त्रैलोक्यसाखिलेश्वरि । सर्वाबाधाप्रश्रमनं कार्यमसाद्वीरिविनाशनस् ।। एवसेव त्वया (१६) सर्वविध अभ्युद्यके लिये सम्मता जनपदेषु धनानि ते तेषां यञ्चांसि न च सीदिति

धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा येवां सदाम्युदयदा भवती प्रसमा॥

(१७) दारिद्रचादुःखादि नाशके लिये

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमश्चेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुमां ददासि।

दारिद्रचदुःसभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोषकारकरणाय सदाऽऽद्विच्ता।।

(१८) रक्षा पानेके लिये ग्रुलेन पाहि नो देवि पाहि खन्नेन चाम्बिके। षण्टाखनेन नः पाहि चापज्यानिःखनेन च।

(१९) समस्त विद्याओंकी और समस्त स्त्रियोंमें मातृभावकी प्राप्तिके लिये विद्याः समस्तास्तव देवि मेद्यः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु। त्वयैकमा पूरितमम्बयैतत

का ते स्तुतिः स्तब्यपरा परोक्तिः॥

(20) ह	व प्रकारके कल्याणके लिये
	सर्वमङ्गलमङ्गलये शिवे सर्वार्थसाधिके।
	शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
(२१) =	राक्ति-प्राप्तिके लिये
	ष्ठिष्टिखितिविनाशानां शक्तिभृते सनाति ।
	गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।
(२२) :	प्रसन्नताकी प्राप्तिके लिये
	प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
	त्रेलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा मव।।
(२३) 1	विविध उपद्रवोंसे बचनेके लिये
	(क्षांसि यत्रोग्रविषाश्र नागा
	यत्रारयो दस्युवलानि यत्र ।
	दावानलो यत्र तथान्धिमध्ये
	तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वस्।।

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammmu. Digitized by S3 Foundation USA

🖁 (२४) बाधामुक्त होकर धन-पुत्रादिकी प्राप्तिके लिये सर्वावाधाविनिर्म्रक्तो धनधान्यसुतान्वितः । मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ (२५) भुक्ति-मुक्तिकी प्राप्तिके लिये विघेहि देवि कल्याणं विचेहि परमां श्रियम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि दिशो जहि।। (२६) पापनाश तथा मक्तिकी प्राप्तिके लिये नतेम्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि दिषो जहि ॥ (२७) स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्तिके लिये सर्वभूता यदा देवि खर्गमुक्तिप्रदायिनी। त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु पश्मोक्तयः ॥ (२८) स्वर्ग और मुक्तिके लिये सर्वस बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।

खर्गापवर्गदे देवि नारायणि

नमोऽस्त ते ॥

(२९) मोक्षकी प्राप्तिके लिये

त्वं नैष्णवी श्वक्तिरनन्तवीर्वा

विश्वस्य बीजं परमासि माया।

सम्मोहितं देवि समस्तमेवत्

त्वं वे प्रसन्ता श्ववि सुक्तिहेतुः॥

(२०) स्वप्तमें सिद्धि-असिद्धि जाननेके लिये दुर्गे देवि नमस्तुम्यं सर्वकामार्थसाधिके । मम सिद्धिमसिद्धिं वा खप्ने सर्वे प्रदर्शव ॥



२६१ आ० अा०

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!) भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय ! जय !! जग ॰ तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा। सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ॥१॥ जगजननी॰ आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी। अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी॥ २॥ जग॰ अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी। कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी ॥ ३ ॥ जग॰ तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया। मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया॥ ४॥ जग॰ हु॰ आ॰ एष्ठ २६२

तू, सीता, व्रजरानी राधा। तू वाञ्छाकल्पहुम, हारिणि सब बाधा॥ ५॥ जग॰ नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा। अष्टमात्का, योगिनि, नव नव रूप धरा॥६॥ जग॰ तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तु। तु ही शमशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ॥ ७ ॥ जग॰ सुर-मृति-मोहिनि सोम्या तू शोभाऽऽधारा। विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥८॥ जग॰ तृ ही स्नेहसुधामिय, तृ अति गरलमना। रत्निवभूषित तू ही, तू ही आस्थि-तना ॥ ९ ॥ जग॰ मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।

दु॰ धा॰ एष्ठ २६३

त बरदे ॥१०॥ जग० कालातीता काली, कमला कि शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी। वाणी विमले ! वेदत्रयी ॥११॥ जग॰ हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे। अति कपटी, पर बालक तेरे ॥१२॥ जग॰ निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै। करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजे॥१३॥ जग॰



देवीमयी

तव च का किल न स्तुतिरम्बिके! सकलशब्दमयी किल ते तनुः। निखिलमूर्तिषु मे भवदन्वयो मनसिजास बहिःप्रसरास इति विचिन्त्य शिवे ! शिमताशिवे ! जगति जातमयत्नवशादिदम्। स्त्रतिजपार्चनचिन्तनवर्जिता न खलु काचन कालकलास्ति मे।।

—महामाहेखर बाचार्य अभिनवगुप्त





गीताप्रेसकी निजी दुकाने

- १. गोविन्दभवन-कार्यालय, १५१, महात्मागांधी रोड कलकत्ता—७. फोन-३८६८९४.
- २. २६०९, नयी सड़क, दिल्ली-६, फोन-३२६९६७८
- ३. अशोक राजपथ, पटना-४
- ४. २४/५५, बिरहाना रोड, कानपुर-९, फोन-२५२३५१
- ५. ५९/९, नीचीबाग, वाराणसी, फोन-६३०५०
- ६. सब्जीनण्डी, मोतीबाजार, हरिद्वार
- ७. गीताभवन, गंगापार, स्वर्गाश्रम, फोन-१२२

गीताप्रेसकी स्टेशन स्टालें

१-दिल्ली जंक्शन, २-नयी दिल्ली, ३-कानपुर, ४-गोरखपुर, ५-वाराणसी, ६-हरिद्वार अधिकृत थोक व फुटंकर विक्रेता

श्रीगीताप्रेस पुस्तक प्रचार केन्द्र, ''बुलियन विल्डिंग'', हिल्दयोंका रास्ता जौहरी बाजार, जयपुर—३ (राजस्थान)

नोट—विशेष् ज्ञानकारीके लिये गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तकोंका सूचीपत्र निःशुल्क मँगाये।





